श्रीराजचंद्रसूरीश्वरसद्गुरुभ्यो नमः॥ पहिलाश्रादिनाथनउछेदल्या महावीरनउकल्पेश्राचारकहि स्यउ। मांगलीकहउश्रीवर्द्धमानस्वामि ना तीर्घनइविषइ। इहींकल्पसूत्रनइविषइकल्पाध इ जिननांगणधरनां घविरावलीनाचारित्र तथासामाचारीपुण

ए९ए॥श्रीगुरुभ्योनमः॥पुरिमचरमाणकप्पा। मंगलेवद्धमाणतित्थंमि। इहपरिकहियाजिणगणा।दराइघरावलि

कहीछइ॥ १ पहिलाछेदल्याजिननाती घैंकरना। द्वीष्यनउपदकल्पआचार। जेवषीरतिचउमासिरहइ वधीदृष्टिहुउअथवा मरुउ॥ २ मध्यनाविचिलातीर्घंकर

चरित्तं॥१पुरिमचरिमजिणाणं। सीमाणेएसकप्पउचेव।वा सासुपक्का सविऊइ।वासंपडउमावा॥२ मज्झिमया

नामाधुनइसज्ञा ज ना॥ पज्जूसणलगीरहइअथवा नरहुइ। मांगलीकहउमहावीरना तीर्घनइविषइ। जिलिकारलिमांगलीकृतिणिकार णिजिननां चरित्रकहीइ

पुणसयणिऊं। पक्कोसवितिवानवा। मंगलेचश्रीवद्धमाणसामितिछे।जएमंगलतेणजिणाणंचरियाइंक

हइ। समोसरण अनेंइं मांगलिकनइंकाजिइंघविरावलीकहियइछइ कल्पआचारनाद शास्त्रकार तेकहीइछइ। अचेलधर्म १ उद्देस कपिंड

हिऊंति। समोसरणाणिआ। मंगलछमेवयघरावलिआकहिऊइ। कल्पोदशधा तद्यथा।अचिलुक्कु१द्देसि

२ शय्यानरपिंड ३ राजपिंड ४ कृतिकर्मवांद णी ५ व्रतपांच आरिमहु व्रत ६ जेष्टचारि त्रनीवडी ७ पडिक्कमणउंट मासकल्पं ९ पज्जूसण रीकल्प कल्पसंवच्छ १० ३ अचे लपणा

आरसिज्जायरत्र रायपिंडध किइकम्मे५ वय ६ जिट्ठ७ पडिक्कमणे८ मासंए पज्जोसवण कप्पे१०।३।अचेल

उंतेकहीइजेमानप्रमाणोपेत जूनोमरिसो धउलोवस्त्रनउं धरिवउं एहिवउं। १ उद्देशकपिंडि एकश्रमणमाधुनइंउद्दिसीनइकीधउतेग्रहणइसाधुनइं नकल्पइ॥ २

वेमानाद्युपेतजीर्णप्रायशुक्लवस्त्रधारिचं। औद्देसिकपिंडएकंश्रमणादिमाश्रित्यकृतः सर्वेषामकल्प्यःशि

शय्यातरवसतिउपाश्रयनउधणीतिदनाघरनउंअशनपा | राजादेशनउधणीतेदनउपिंडआहारनकल्पइ | ऋतिकर्मकदतोवांदणांसघलीसाधवी

स्वादिमस्वादिमनकल्पइ॥३॥

शय्यातरोवसतिस्वामीतस्याशेनाद्यःकल्पं। राजादेशाधिपतिस्तस्यपिंडोऽकल्पः। ऋतिकर्मसर्वासिःसाध्वीस्तिर्लघो

इलजकाइसाधुनईदेवा ५ | महाव्रतपडिलाभेहिलोजिननइवारइपांचशेविचिलाबावी | चउधउंव्रतस्त्रीनइपरिग्रहरूपणइकरीपांचमामहाव्र

मनईवारइ-आरिऊइ॥ तमाहिज

रपिमाध्वेकार्यः। व्रतान्याद्यांत्यार्हतांपंचछेदोपस्थाप्यार्हतांतुचचत्वारि॥ चतुर्थव्रतस्यस्त्रीणांपरिग्रहरूपचेनपंचमव्रत

अंतर्वस्त्रउगलि | वउ ई | वडाईपडिलाभेहुलाजिननईवारइमहाव्रतईऊइ॥ | छेदोपस्थापनाचारित्रबावीसजिन | पडिकमणउंआदिअंतिति

नईवारइदीक्षाज्ञवराऊइ | ननइवारइअवश्यबेवा

एवंतीर्थांतरात्॥ ज्येष्ठत्वंमाधुनामाद्यांत्यार्हतामुपस्थापनापर्यायेण॥छेदोपस्थाप्यार्हतांतुदीक्षया॥ प्रतिक्रमणमाद्यांत्या

रदिनप्रतिईकरिवउ | छेदोपस्थापनाचारित्रबावीसजिननईवार | इमछेदोपस्थापनाकालिएकइगमिमासकल्पऊपरांतेनरद्विउमासकल्पजाकु | वर्षाकालिच्या

कारलिइहूएणलाग | उजाणेइतिवा | रद्विउ

र्दितामवस्थपंचिः॥ छेदोपस्थाप्यार्हतांतुकारणएव॥ एवंकचबुद्धकालेएकत्रमासावस्थानरूपोमासकल्पः॥ वर्षासुचतु

रिमासरद्विवारूपकल्पजाणिवउ। | १० | अचेलधर्मवस्तुरहि | पडिलाभेहुलाजिननईवारइ | विचिलाबावीस

जिननइ

र्मासावस्थानरूपः पर्युषणाकल्पश्चज्ञेयः॥ आचेलुक्कोधर्म्मो। पुरिमस्सयपच्छिमस्सयजिणस्स। मज्झिमगाण

वारइ। | सचेलधर्मअनइअचेलधर्मबेवइ | कोईएकयतीनामं | अवगाहिमादिअमणयतीसाध्वी | कीधउंतेसघलाइसाधुसा | नकल्पइ

ईछइनइद्विमानइ | प्रमुखआश्रीनइ | धवीनई

जिणाणं॥ दोइसचलोअचलोअ॥ ध मंघाडुद्देसेणं। उघाईहिंमणाइअहिगच्च। कडमिदमत्तेसिंचिअ॥ नक

पडिलाभेहुलाजिनानासाधु | ५ | विचिलाजिननईवारइ | जेनेईउद्देशीनईकीधउंकहतेह | नकल्पइशेषबीजानइ | कल्पइएरुमर्यादाजा

साधवीनई | एतलउविशेष | तेहनईजआसारलेवउ | लिवी

ष्यएपुरिमचरिमाणं॥५ मज्झिमगाणउइमंजंकडमुद्दिस्सतस्सचेवति। नोकप्पइसेसाणउ।कप्पइतंएसमेरत्ति

६ | शय्यातरतेकहीइजे | उषाश्रयनउधणीतिदनाघरनउपिंड आहार | तेमघलाइतीर्घंकरनइ वारइनकल्पइ | प्रमाणिइरागईकरीशय्यातरघ णउदोषलगाडइ | ७ | जइ सुवि

॥६ सिक्खायरत्तिनइ। आलयसामीअतस्सजोपिंडो। सोसव्वसिंनकप्पइ।पसंगगुरुदोसनावाउ।७ जइ

हितसाधुजागइतिवा रई | पडिकमणउंसज्झायअनेरइदूकउ | शय्यातरनदोइ | सूत्रपडिकमणादिकीधइ जाशय्यातरऊइ | ८ | दूणां | वीकरादि कडगल | रोष

जग्गंतिसुविहिआ।करिंतिआवस्सयंचअन्नत्था।सिक्खायरोनदोइ।सुत्तेवकएवमोदोइ॥८।तणडगलछा

कंडलादि क | पाटिप्रमु ख | डासणप्रमु खमंगावउ | पाटीउं बाजउ | लेपचूनऊपू दादिके | शय्यातरपिंडएसर्व | नकल्पइ।जोजउआसारवस्त्रशा ९ | जेहनामसूनइविधइअतिशेषकी | + नउ+ध ॥ शिष्यप्रथमि महिनलेवउ विदरवउ॥ ३

रउमल्लगधसिद्धाउसंघारइपीढ०लेवाईछ सिक्खायरपिंडोमो। नदोइमेदोअमोवहिउ॥९ मुहिआइगणा

श्रवऊइ तेराजा | तेराजानउआउप्रकारपिंडआदारप्र मुख | पडिलाभेहुलाजिननुई वारइ | घाघीघोरारघवामीप्रमुखन इआघातईकरीनिषेधउ | १० | मुदितराजातेकहीइजेह नईमरुकेअतिशेषकीधु | कहाअ नईपांच

राया।अहविहातस्सहोइपिंडुतिा पुरिमेअराणपसो।वाघाईहिंपडिकुट्ठो॥१० मुइउमुद्धसिसित्ता।पंचहिं

अमात्यामंत्रिर युवराजइश्रेष्ठि सेनापतिलि:१२ | स्सउंपरिवस्सउराज्ञनो | तेराजानउपिंडआदार | तेहघकउविपरीतमामा | १११ | अशनपानखादिमस्वादिम वस्त्रपात्रइकांबल?

गवइ | टालिवउनलेवउ | न्युंकृतउत्तजनाप्रस्ताव | एइत्यादि अनइ

समिंउजुंजएरज्जं।तस्सउवज्जोपिंडो। तंविवरीयंनयणाउ॥११ अमणाईआचउरो।वत्थेपायेचकंबलंचेव।

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

पुढणइं उघाडमुखप | एआवप्रकारराजपिंडनले वउ | १२ ईश्वरतलारमोरंबीअमु खइंकरी | आघातऊडारमलालचीघकउइ लाआवइजइ इमकइइ | रारास्त्रीनोदश्नि ऊइ लोकगरइइजोवाआ वइ जइ

पाउछणगंचतहा। अहविहोरायपिंडोति॥१२ईसरपलिईहिंतहिंवाघा ंखहलोऊदाराणं। देमणसंघोगरहा॥ ॥गो॥१

विचिलानइवारइअप्रमत्तयती लइतिलिनिषेधनही | ऋतिकर्म्मवांदणांतेदनावे प्रकार | एकवडानईऊभेजइगाघावउंबी जउ वांदणांदेवां | माधुमाधवीइयघायोगि | वांदणाप्रमु ख विनय

इअएसिनअप्पमायाउ। किइकम्मंपिअविहं। अमुहाणंतदेववंदणीयं। समणेहिंमणीहिंअ।जहरिहंदो

करिवउ। १३ सघलीसाधवीइं | वांदणांसघलाइसाधुनइंदवो | पुरुषोत्तमधर्मनइंदत्तली पुरुषवगा ऊइ | सघलाइतीर्थंकरनइंवा रइ | १४

इकायव्वं॥१३। सघा हिंमंजईहिं। किइकम्मंसंजयाणकायव्वं। पुरिमुत्तमुनिधम्मा। मज्झिमाणंजिणाणं। पंचमहव्वयरूवं। पडिक्कमणंसपडिक्कमणं। धम्मोजिणवरवीराणं। अचेलओयह

खलुनिश्चइंपांचमहाव्र त रूपधर्म | पहिलाछेदलाजिननइंवारइऊइ | विचिलातीर्थंकरनइवारइ | ग्यारमहाव्रतरूपधर्मजा लिवउ | १५ अपरिगहो

पंचवउखलुधम्मो। पुरिमस्सयपछिमस्सयजिणस्स। मज्झिमगाणंजिणाणं। चउव्वउदोइविन्नेउ॥१५ नोअपरि

तस्त्रीसाधिइं जिलिकारलिलोगनऊइ | तिलिकारलिस्त्रीनीवि रतिते | अव्रतविरतिकहीछतेपरि ग्रहमाहिजनस्पउ। | १६ बिऊंप्रकार ग्यारितघा पांचमहाव्रतरूपधर्मति | धु मू ई | *बिऊंनइं+२

ग्गहिआए। इत्थीएजेणहोइपरिलोगो। तातद्विरइइत्थिआ।अबंभविरइत्तिपन्नाणं॥१६ इणविउविदोवित्ति।एसो

आजन्मजावजीवपालिवा नली जालिवउ | इमव्रतनइंतेदिइंकरीवि ऊंप्रकारजालिवउ | तचपरमार्थघकउपालि वाआश्रीएकप्रकारजजु लि पुणी वउ | १७ महाव्रतऊचराविवइ जइंधर्म दीक्षानुउवउ | जालिवउ।पहिलाछेदला जि ननइंवारइ

आजम्ममेवविन्नेउ। इअवयलआऊविहो।एगविहोचेवतत्तेणं॥१७ उवगरणइंजिहो।विन्नेउपुरिमपछिमजि

दीक्षाइंजकरी | विचिलाजिननइवारइवकीआइंऊ इअतीचारहितपालइतउ | १९ उत्तमकालनापडिकमणो सहितधर्मतेसपडिकमणोध र्म | पहिलाछेदलाजिननइंवारइजालिवउ। | विचि लाजि

णाणं। पच्छिमापउंतहा।मज्झिमगाणंनिरइआरो॥१९सपडिकमणोधम्मो।पुरिमस्सयपछिमस्सयजिणस्स।मज्झि

ननइंवारइयतीनइं | कारणिइंदूषणलागइपडिकमण उ ऊइ | २० पहिलाछेदलातीर्घकरनइंवा रइ | रहिवाआश्रीउत्कृष्टउमासकल्प स्थितसदामर्यादाजालिवउ | मध्यमविचिलाजि ननइं

मगाणजिणाणं। कारणजाएपडिक्कमणं॥२० पुरिमंतिमतित्थगराणं। मासकप्पोठिउमुणेयव्वो। मज्झिमगाणं

वारइ | अवस्थितदूषणनलागइउमा मकल्पनीबांधणीनही | २१ एकगमेरहितांदूषणन लागइउविचिलाजिननावा | राजासाधु घर्वकोडिलगीएकगामि रहइ | दूषणलागइत्तउएकगामि मासकल्पपुणनरहइ | एवंइ मखुनि

जणाणं। अचेलिओएसविन्नेउ॥२१ दोमासइमज्झिमगा। अच्छंतियजावपुव्वकोडीवि।इहराउनमासंपिऊ।एवं

श्वइविचिलाजिननउकल्प आचारु जालिवउ | २२ पर्युषणाकल्पचउमासर हिवानउआचार | इमपहिलाछेदलाजिननइंतेदि ई करी | उत्कृष्टउजघन्यइमवि ऊंतेदिइंकरी | तेपर्युषणाकल्पऊंन चरंएकुंउत्कृष्टनउतेदिजालिवउ जघन्यउ

खुविदेहजिणकप्पी॥२२पऊोमवणाकप्पो।एवंपुरिमअरणेएणं। उक्कोसेअरहत्तउ। सोनवरंदोइविन्ने

२३ | चोरिमासनउउत्कृष्टउच उमासइरहिवानउकल्प | जघन्यतउसत्तरिदिननउऊंइपडिक्कमणप डिक्कमणपछी अवस्थरहियउज | घविरनइंपुमपरुनेदजाणि ज्जाजिनतीर्घकरनइंउ | नियमनिश्चइंउत्कृष्टउऊंइ चउमासइथमासर हइज | २४

उ॥२३ चाउम्मासुक्कोसो। सत्तरिराइंदिआइंजहन्नो।आ।घराणजिणाणंपुणो। नियमाउक्कोसउचेव॥२४इ

इहंअनस्थिरहिवान उनिश्चयनही | आषाढचउमासापडिक्कमणपछी एकमासनइवीसदिनलगी | पजूसणपछी अस्थिरहि रहिवानउनिश्चयघरयउ | गृहस्थजाणइतिमउघाडऊंक इइजेअहइहोरसं। | २५ आषाढचतु मासापहिली

उयअणसिगहिआ। वीसईराईदिआ।वीसईमासो।तेणपरमसित्तहिआ।गिहिनायंकत्तिअंजावा॥२५काऊणमा

मासकल्प करीनइ | तिहांचउमासिरसोढतांवर्षायोगि मागसिरनात्रीसदिनबलीघाइ | मालंबनीकामीघवि रकल्पी साधुनई | छमासनउचूकूइत्र अव्यइ ऊरुउचूइ३मासलगी चउमा सिरहइ २६ | घंटिलहरमिडलेनऊइअ नइसुइसंघारउडलेनऊइ वामिसं कीमऊइ

सकप्पे। तच्चे विजिआणतीसमयसिरे। मालंबयाणंपुणो चम्मासिउदोइजिहुगदो काइअत्तमीसंघारएअ। संमत्त

निऊआसारऊलेनऊइ जिणिऊइवि | इणिकारलिइं | चउमासपडिलउंजतेषेत्र २७ घीविदारकरइनर ६इ॥ | जिणिषेत्रिराजाऽइअ ऊ इ॥ मर्यघणाऊइ०क घूआघणा | अगनिनासय०रोगघणा ऊपजइ० जिणि एलि चेत्रिघंटिल सुद्धनऊइ

ऊालदेनिस्का एएदिंकारणेदिं। अप्पत्तेदोइनिग्गमणं॥२७ रायासप्पेऊंघू। अगलिगिलाणेअघंडिम्मऽमइ। एए

कारलिइ | चउमासापडिकम्मापडिल उंजतेषेत्र घीविदारकरइ | २८ | जिणिषेत्रिमेरूवरसतउ रहइनही | मार्केकादवाला दीकंतांदोहिलालपत्ती पहोइ | इणइकारलिइं | चउमा सपडि

दिंकारणेदिं। अप्पत्तेदोइनिग्गमणं॥२८ वामंदानोविरमइ पंघावाऊगमामचिक्कला। एएदिंकारणेदिं। अप्पत्ते

दिकम्मापडिलीतेषेत्रि घीसाधुविदारकरइ | २९ | जिणिषेत्रिदेवतानाउपऊख ऊइदिवाडीकणादरीघाइ। | राजाऊइऊ०नयघणाऊइ। रोगमंदवाडिघणाऊइ | इणइकारलिइं | चउमासापडिकम्मापडिलेउंज तेषेत्रघीसाधुविदारकरइ | ३०

तेदोइनिग्गमणं॥२९ असिवेउघोअरिउए। रायउद्घोसएअगलनो एएदिंकारणेदिं। अप्पत्तेदोइनिग्गमणं। ३०

मासमांहिबेवार चारिमास मांहिमातेवार नदीऊतरवी घाइ | चउमासमाहि तेषेचनहणाइतिदोचा उमासिरहइ॥ | मासेमांहितिन्निवा वार ऊतरेवउघाइ | चउमासमांहिआगनउ णीऊइवार ऊतरेवउघाइ | जेणीनदीइजेघधी अधिकउणा तिहुनरहुइ | ३१ | धुवनिमइलोचकरि चउमघलाइजिननई

ऊगतिन्निमत्तवारा। उडुवामासुनहणेतिंखित्तं। चउरघाइहणंती। जेघदिकोविअपरेणं॥३१ धुवलोउउजिरमा

वार इ | नित्या घविरचारित्रियानईचउमा समाहि॥ | असमर्घऊइ | स्नानरोगीउमाधु ऊइतउ | तेजाऊइवायुदिपोचमिनासावि खुरमुंडादिकइकरी वउलुवीन इ | ३२ | अचेलधर्म | उद्देशक पिंड

णं॥ ससनिच्चे घेराणावासवासासु। असक्कणिज्जाणगम्मावा। नाइक्कामिऊंतरयणं॥३२ आचेलुक्कुद्देसियरा

| कमणउं ३ | राजपिंड ध | मासकल्प५ | पर्यूषणाकल्प चउमासर हिवानउआचा | ७ | एहस्थितकल्पजालिवउमघलां जिननइवारइमरिषउकल्पन ही | ३३ | ग्रामांतरपिंडटालिवउ | ध्या ति

डिकमणउ रायपिंडध मासमुप। पऊंसणाकप्पेमि॥१७ अच्चियकप्पोमुणेयव्वो॥३३ सिज्जायरपिंडं मियं चा

महाव्रतपालिवा | धर्मादिपुरुषज्येष्ठत्व जालिवा ३ | लऊगोइवऊजानइमाधवीइमाधु नइवांदणादेवोज ४ | स्थितकल्पमदेवएऊइविचिलाजि ननइवारइ पलटाइनही | ३४ | उषधनाइघकार उषधइरोगऊंतउटाल ए क रो ग्य न

ऊक्कामेअरपुरिसजिहरकिइकम्मायकरणेध। विअकप्पोमज्झिमाणंपि॥३४ वाहिमवणेइनावेऊ

ऊइतउनवउरोगऊपजावइएएहि ला उषधनउत्तेद | ५ | बीजउंउषधरोगऊइतउटालइ रोगनऊइतउनवउरोगनकरइ | त्रीजउंउषधउरोगऊउनाव इमहवउपुणगुणउकरइ | ३५ | इणिदृष्टांतेईएए दोषनइअन्ना कल्प आचार | विइदोषविना

णइअसावेतयउपठमंति॥५ बिइअभवणेइनऊणइ। तइअउरमायणंहोइ॥३५ एवंएसाकप्पो। दोसासा

पुणपालीतउआचरीत उ | ६ कंउ | सुंदरनलासावघकउ | निश्चइ | चारित्ररमांगमरीषउधाइ। तेहनइउसंयमसुद्धघाइ | ३६ | इमकल्पआचारनउ विनागुणकार | त्रीजाउषधसरिषउगुणका रीजालिवउ

वेविकिऊमाणोअ। सुंदरनावाउखलु। चारित्तरमायणंहोइ॥३६ एवंकप्पविसागो। तइउमरुनायउमुणो

नावसुवत्तलइत्ताविसंयुक्त रणजालिवउ | ७ | षकउइहांमघलइएका ना विइसिद्धिऊइ | ३७ | जिमकिणहीकराजाइपोतानापुत्रनइरोगनहीपुणआगलिनवारोगर षेऊपजइ तेणीबुद्धिई अनागतिंतिगेला पडिलीपडीगणउकरावि

यव्वो। सावऊजुउइछउसचल्लविकारणंएअं॥३७ यथाकेनापिराज्ञास्वसुतस्यान्यागतचिकित्सायां कार्य

वानईकाजि इं | त्रिभिवैद्य तेद्या मत्रा | तेत्रिभिर्वादिपंडितउ वैद्य बोलिउ | इराजामारउएहवउउषधलइ नउव्या धिरोगऊम्मइतउ टालिम्म इ | रोगनहीऊइतेउ नवउ

माणायो। त्रयो वैद्या आकारिता: तैर्यद्य: प्रोक्तं। मदौषधंमज्ञावेव्याधिमपनयति। असावपिउ पयुत

रोग करिष्यइ | राजाइंक ह्यउपुरुहि वा धरेइ | सत्ता मीहजगडीवा मरिषुं। एणइउषधइ अम्हारइषध नथी | बीजउवैद्यबोल्यउ हेराजा | मारुउंषधजउआधिरोगऊ इनउ टालइ | रोगनऊइतउ

नष्टंकरोति। राज्ञोक्तं। मुहसिंदोऽापनकल्पेनानेनालं। द्वितीयःआह। मऊवेव्याधिमपनयति। अन्तावेचन

रोषनकरइअ वगुणनकरइ | राजाइंकहु उं | रोषमांदिदोष्यामरिषउ एणइउषधइंअम्हा रइषध नथी | बीजउवैद्यबोल्य उ | हेराजामारुउं उषध व्याधिऊइतउटा लइ

दोषंकरोति। राज्ञोक्तं। तस्मनिऊतकल्पेनानेनाप्यलमिति। तृतीयःआह। राजन्मदौषधंमऊवेव्याधिमपन

रोगनऊइतउ उ हिंपुहि बलवीर्यकांतिकलावधारइ | इमसांभलीराजाइंतेवैद्यपाहिंथ्यनइतेउष धकरावी तेवैद्यमनमानी बोल्यउ | इमएहकल्पआचारबीजाउष

यति। अन्तावपिनुद्विपुद्याद्यनेकगुणऊक्तोराज्ञातंकारयित्वामसन्मानितः। एवमेषकल्पोपितृतीयो

धमरिषउजाणिवउ | पहिलाआदिनाथनइवारइ धर्मजाणतांदोहिलउ | छेल्लामहावीरनइवारइधर्मजाण पुणपालतांदोहिलउ | विचिलाबावीसतीर्थंकरनइ वारइ | धर्मजाणतांसोहिलउ अनइं

षधवद्विज्ञेयः॥ पुरिमाणऊद्विसुद्धाचरिमाणऊरणुपालकयो। मज्झिमगाणजिणाणोसुविसुद्धासुहं

पालतांपुणसोहिलउ | आदिनाथनावारानाजीवऋजु मरलपुणजडकरुविनानजा णइ॥ नाटकीयानाटकिणनइंन्याइंकरी जाणिवा | वक्रजडछेल्लामहावीरना वारानाजीवजाणिवा | विचिलातीर्थंक रनावारानाज्ञ

णुपालेसुहुं॥२८। उज्जुजडापुरिमाखलु। नडाइनायाउक्तिनायद्या। वक्कजडापुणचरिमा। उज्जुपन्नाम

वक्रजुप्राज्ञमरल अनइंविंडितकरुं | २९ | ऋजुजडजेहयाहुवइ तेह्वाकहिंहुवइ | नाटकीयाजोश्यातिवारइगुरिइंवा साधुवली नाटकि वलीक्रिम करइछइ | ऊंकणदेशनामिइंसघ लइं

ज्झिमास्तेषां॥३० ऋजुजडायद्या॥ नर्त्तकनर्त्तकीनृत्यावलोककः साधुः। यद्यावादेशनास्तेवसर्वत्र।प्र ४

धमिहुंकुंकणवाणीउ | ऊटुवनउमोरुबांडीन वडपणदीक्षालेतउ | तेसाधुदरियापडिकमी नइ | काउस्सग्गअनइंविषइंवडी वार रल्यिंतिवारइं

सिद्धः कौंकणावणिकु। कुटुंबमोहंसंत्यज्य। दृढव्रतेव्रतमाददे॥ ईर्यापथिकीकायो। त्सर्गेतस्थौचिरंमुनिः

गुरिइंसबउंवडीवारघइं ऊंकणमुनिदीक्ष्यउ | हुंस्वामिनू मइंजीवदया २ | चौतवी। किमचौतवी इम जिवारइंघरव्यउ | गुरिइंतिवारइंसाधुबोल्य उ | जिवारइंघरि

। गुरूक्तः कौंकणोवादी। मयाजीवदयाक्षिप्तो॥२ ध्मातांकधमितिप्रोक्ते। गुरुणाऽन्नादिवामुना। अवसामयदा

वसूत्रा | हुयुरुजीतिवारइंवर्षाकालि | ३ | करताअम्हेअघलइ | क्षेत्रनइंविषइंहरुवनम्य | दवानलअग्निनिघत्रमा। ए | वेलडीऊपा डीना

गदो। ग्रस्तोग्रीष्मात्ययेतदा॥३ अकारयामसर्वत्र। क्षेत्रेवृक्षनिसूदनं। अमोचयामदावंचाऽ। सऊरियामत्र

घता | ४ | तिवारपछीवावताघणा धान | क्षेत्रमांहिअम्हारइनापतां | करसणनइंविषइंडारनथी | ५ | निचिंतछइमास्तापुत्र | ५ | तेषु

वल्लरी॥४ ततः प्रस्तुतधर्मन्या। क्षेत्रेऽस्माकंसदास्तवत्। ऊषावऊशालाःपुत्राः। निश्चिंताःसंतिमेग्रसो॥५ तेष्व

जउइमकरइ | छिडोवर्षाकालितउ वारूघाइ | जउइमनहीकरइतउते पुत्रमरम्यइ | बापडानूंछिइंघणउं | ६ | इमजीवदया चीजवी | अम्हेदिया

वंयदिकुर्वंतिं। सोप्रतंदितोवरं। अन्यघातेमरिष्यंति। वराकाःक्षुधयास्त्रशो॥६ इतिजीवदयादधृऽ। स्मास्तिर्म

मांहिंहिवडां | गुरुबोल्याहेभद्रिष्य मरुमत्रधैर्यवंत | संउंउंआरैंसचौतवउं तइं | ७ | जिलिकारलिअपंतजी वनउसंहारहिंसा | पषइकरमणनऊपजइ | तइंनूं उंचो

ध्येक्षदोधुना। गुरुराहमहासत्व। ऽस्मिंस्तितमिदंत्वया॥७ यतोतिजीवसंहारं। विनानोत्पद्यतेऽषिः। त्वयाऽ

तव्यउं तिलिकार लि | मिछामिडक्कडं द्यउ। यतीइं दीक्षउ एहवानइकयती | ८ | श्रीवीरवीरनाम्नामननाजी व वक्र जड ऊइ | जिमकोईअहेनउ पुत्र अविनीत | पिताइंसीष अम्हाजेसगा

स्त्रिंतितंतस्मा। न्निषाद्युक्तमुच्यतां॥८ श्रीवीरतीर्घउवक्रजडाः। यद्याकश्चित्स्वेष्टिपुत्रोऽविनीतः।पित्रास्वजन

सणिज्जामित्रदेषतांससामादिसादमानबोलीइवडानइं प्रत्युत्तरदिनदीजइवचनवालीइनही | एकदाप्रस्तावेकार्यविशेषेइंसरूबादिरिगयउढइअम र बारणइंदेई मादिबइवउढइ | बारणइआवी

समक्षंपित्रादीनांप्रत्युत्तरंनदद्यमितिशिक्षितः।कदाचिन्मर्वेषुबहिर्गतेषुगृहेघरंदवास्थितो।घारगतेनत्रे

सेनिइंबारणउंकमाडऊघाडिवामारूघणासादिकीक्षपुणबोलइनही।तितिऊपरि चडीमांहिनईपिताइंमोचाऊपरिबइछउदम तउदषीनइउलंनउ

ष्टिनाद्वारोद्घाटनार्घंबक्रत्राङ्करणेष्यवदन्निजेरूपरिप्रविरूपम।।गतेनपित्रास्वद्वास्तोरुसन्नुपाल

दीक्षउऊम र कहइ | चुम्लेजदईभीषवउजे | वडानइंऊत्तरदीजइएह वा वक्र जड छइ | विचिलाजिननइंवारइ | जीवऋजुपंडि कता | तेघाकुंइक दिउछइ

ष्टः प्राह।युष्मान्निरवद्यितोदो यत्पुत्रंनदद्यमिति॥मध्यमतीर्घरुकालेच। ऋजुप्राज्ञा॥ तेघाऊः।

आदिनाथनइवारइजीवऊ धर्मकार्यकरतापाषइनजाणइ | तिलिपंचमदाव्रतकुलइ बेसीधुनाइष्टांतकरइ | ए | श्री म

स्त्रिंजुजडापदमजिना। वक्रंनमुणंतिकदिअमवितेणा पंचवयापडिसलिया। दोमाऊइछदिठंता॥९च

रुवीरनइंवारइ | वक्रजडजावअमदासर्वदा करइ | सूधउधर्म जाणता घकापु णनकरइ | तिलिकारलितिहांपांच महाव्रत जालिवा | २ | तिणिइषत्रइं

एमतिछयरसमये। वक्रजडानंउणोमयासणिआ।जाणंतावि ऊनऊणंति।तेणतिछेवपंचवया॥२चिक

कादवअल्प१ | बेइंद्रियाजीवअल्प२ | घंडिलभुइ ऊइ ३ | उपाश्रयभुइऊइ४ | इकाणंघणाऊइ५ | लोकनावामघणाऊइ६ | जिहुंवैद्यऊइ७ | उषधलानइ ८ | धान्यसंग्रहमाग ९ | गाऊरुहवऊइ १० | अन्यदर्शनीऊइजिहांइ ११ | तिहांसुधिमिलइ १२ | मनायजिहां

ल्ल१पाण२ घंडिल३ वसहीध४ गोरस५ जणाउलि६ विऊ७ उसह८ निचयाए९ विईए१० पासंडा११ तिरक१२ सभा

प्रवर्त्तइ १३ | मोटीजिनप्रासादनीजि यात्राऊइ १ | घंडिलभूमि भुइऊइ | मुखिईसभाय घाइ | जिणेघत्रिइंतिहांमोकिली मिलइ | चउमासरदिवानउंजयन्य घत्र ते जालिवउं

ए१३॥२। मद्दईविहारस्त्रमी१ वियारस्त्रमी२। मुलद्दसभाउ३। मुलद्दातिरकायजिहिं।जद्दन्नयं वासखिन्नंतु

| चिऊगुलिइंसंयुक्तं | तेचउमासरदिवानउं जघन्यघत्रंकहीइ | तेरगुणसंयुक्तंतेउत्कृष्टं घत्रं कहीइ | त्रातिगुणंद्वीघणागुणंतेरघी ओऊउढातेषमघत्रंकहीइ ५ एहवइंषेत्रिइंमाधिइं

॥४। चउग्गुणोवियंच।खिन्नादाइजन्नघो।तरसगुणमुक्कोसंकएमसमिमग्गं॥५।एवंविधक्षेत्रेमाधु

यतीइंचउमासरदिवउं | जिणिकारणि | अत्यंतसदाकालि | पांचसमितिनइंविषइयतीइंजत न करिवउं | वर्षोकालिजयणानउ घणउअधिकार | जिणिकारणिसूमिइं प्राणजीव बेंदियादि

स्त्रिंश्चउर्मासकेस्थेयं।यतः। कामंचउमासकालं। पंचसुसमिईसुहोइजइस्सद्धं।वासासुअहिगारो। बक्रपाणामेयणी

कनीउ यतिघ णीऊइ ६ | जिणेमाधुचउमासिरहइ | जिणेघत्रिपजूसणपर्वनइविषइअवश्यमेवाचारनीकल्पसूत्ररूपधर्मशा स्त्रवी

जणं॥६। यत्रचमाधवश्चउर्मासीतिष्टति।तत्रास्मिन्पर्वण्यवश्यं मंगलार्घमिदंधर्मशास्त्रंश्रीकल्पाख्यंवाच्य

चइ | रणिकारणिअम्हेपुण वांचीइछइ | तदर्घवाच्यते॥मंत्राणांपरमेष्टमंत्रमहिमा।तीर्घेषुशत्रुंजयो।दानेप्राणिदया।गुणेषुविनयो

ति।अतोऽस्मात्सिरपि व्रत्नव्रतेषुव्रतं। संतोषोनियमे। तपस्सुचंद्रायणं स्त्रचेषुशास्त्रेज्ञानं। सर्वेज्ञादितंसर्व

पर्वसुपरंस्यादृषिकंपर्वच॥१ व्याख्या। तत्रमंत्राणिस्तंभनमोच्चाटनंवश्यं करणंद्वाटनादीनिसंति। परंतेष्वपिनमस्का
रःपरममंत्रः। यतः। ऋचापएमदग्राणि। ऋचाऊत्तशतानिच। इममंत्रंसमाराध्य। तिर्यंचोपिदिवंगताः॥२ तघाती
र्थेषु। मागधवरदामप्रभासगंगाप्रयागादिषु॥ इत्यतीर्थेषु। सावतीर्थेषु। समेतशिखरशत्रुंजयरैवतकाचलादि
षु। श्रीवासुपूज्यःश्रेष्ठः। यतः। श्रीरैवतकासमेतवैसरोऽष्टापदादिषु। यात्रयास्मिंस्तेषुयात्रा फलाद्भुतगुणंफलं॥३ दा
नेगोरूमिकन्यादलस्त्रीदिलक्षणे। प्राणिदयादानंप्रथमं। यतः। एकतःक्रतवस्सर्वे। समग्रवरदक्षणाः एकतोसयस्त
त्प्राणिनः प्राणरक्षणं॥४ ददाद्दानं विदध्याद्धोनं। वेदादिकंचापिविदांकुरोद्ध। देवादिकंध्यायद्धसततं वान
चेद्दयानिःफलमेवसर्वं॥५ तघा। गुणेष्वौदार्यस्थैर्यगांभीर्यादिषुविनयगुणःश्रेष्ठतमः। यतः। गजघटास्तुयघासुरसिंधुरः
क्षितिधरेषुयघासुरस्तधरः क्षितिरुहेषुयघाचसुरद्रुमो। विनयएवगुणेषुतघोत्तमः॥६ तघाव्रतेषु। स्मामृषा। क्रोधपरि
ग्रहादिलक्षणेषु ब्रह्मव्रतं प्रथमं। यतः॥ अरक्काणमणीकम्माणमोदणी। तदवयाणबंभव्वयं। गुत्तीणयमणगुत्ती।चउ
रोकसंकिलिप्पंति॥७ तघा। संतोषोनियमः। तत्र नियमानि। अनंतकायवनस्पति।व्रत्याख्यानादीनि। परंतेष्वपिसंतो
षःश्रेयान्। यतः। असंतोषवतःसौख्यंनशक्रस्यनचर्द्धयः। संतोषसंतुष्टाजीवायदित्तंयस्यैवजायते॥८ तपस्सुचशम
तत्रतपांसिपंचाग्निविहतिप्रमुखानि। त्यागाच्चाम्लोपवासादीनितेषुशमःकषायत्यागरूपः। यतः। रागद्वेषोयदिस्यातां।तपसाकिंप्र
योजनं। तावेवयदिनस्यातां। तपसाकिंप्रयोजनं॥९ जुस्सदेवावणदवदवस्स। जलियोखलेणनिद्दहणं। एवंकसायपरिणउ।
जीवोतहसंयमंदहणं॥१० तत्रेषुजावाजीवादिपदार्थप्रज्ञापनारूपेषुसद्दर्शनंसम्यक्त्वं। यतः। सम्मत्तमिउल्लहं। विस्रोत्तसि
यतिरियदाराइं। दिव्वाणिमाणमालिय। सुरकुसुरुत्तमाइणाइं॥११ तघासर्वज्ञोदितसर्वपर्वसुतुर्घरूपाविंतसमूस्त
पर्वाणारेषुपरंप्ररूष्टंवार्षिकंपर्वस्यादिति दृष्टार्थः॥ मरीत्यमुगिरिमेरुहरिरूषुसुरगादपः। चक्रवर्त्तीनरेंद्रेषु। चिंतामणिर्म

६

णीषुच॥१ सिंहःश्वापदजीवेषु। सूर्यस्तेजोऽग्निषु। ग्रहेषुपूर्णिमानीबंधुः। शचीनाथोऽमरेषुच॥२ शत्रुंजयादि
स्तीर्थेषु। मंत्रेषुचनमस्कृतिः। गजेंद्रपदमेस्तंभे। धर्मेषुधर्मआर्हतः॥३ धनंजयश्चयोधेषु। आलिंगेऽग्नौषिषु। कवी
ंद्रेषुचसर्वेषुसिद्धसेनोदिवाकरः॥५ स्थलेस्थैर्येमुनींद्रेषु। शीलवत्समुदस्तानिः। दनूमानस्वामिस्तत्रेषु। शीतोऽग्नौषमतो
षुच॥६ विशालेषुवियत्पीठं। शीघ्रवेगेषुसमीरणः। सर्वमरुत्सुधरणी। नारसस्तृप्रमादिषु॥७ सरःसरेषुशोषादिर्वनंते
यःपतत्रिषु। यघोपकारेषूत्कृष्टः। राजाजीमूतवाहनः॥८ ज्ञानेषुकेवलज्ञानं। मोक्षसौख्यंसुखेषुच॥ तघापर्युषणपर्वे
र्वपर्वमुत्तमं॥९। क्षीरमादिगोक्षीरं। जलमादिगंगानीरं। पट्टसूत्रमादिदीरं। वस्त्रमादिचीरं। अलंकारमादिचूडामणिः
ज्योतिषीमादिनिशामणिः। चुरंगीमादिपवनवल्गनकिशोरं। नृत्यकलावंतमादिमोरं। गजमादिरावणं। देत्यमादिरावणं। व
नमादिनंदनं। कल्पमादिचंदनं। तेजस्वीसादिआदित्यं। सादृश्यैकमादिविक्रमादित्यं। न्यायवंतमादिश्रीरामं। रूपवंतमादिकाम
मतीमादिसीतां। मंत्रमादिगीतं। वाजित्रमादिनंदनं। स्त्रीमादिरंभां। सुगंधमादिकस्तूरी। वस्तुमादितेजनहरी। पुष्पश्लोक
मादिनलं। पुष्पमादिमदनदलकमलातिमपर्वमादिश्रीपर्युषणा पर्व॥ एहपजुषणपर्व आयइंघकइ धर्मनइविषइउद्यम करिवउ॥

एहपजुसणपर्वमादिसर्वशक्तिइंकरीधर्मन इविषइउद्यम करिवउ | यतंजिलिकारउ | शरदिकालिजेपाणीपीयइ तेगुणकरइ | पोसमासमादिजेषाधउं तेगुण कारीऊइ | जेठआषाठमासिजेनिरा करइ तेगुणकरइ | तिणइ मनुष्यं

॥अत्रचसर्वशास्त्रेधर्मोयतनीयः। यतः॥ शरदियज्जलंपीतं। यद्भुक्तंघोषमाघयोः। ज्येष्ठाषाढेषुयन्मुद्गं। तेनजी

जीवइढइ | १ वर्षाकालिलूणअमृत समानऊइ | आमोकातीइंपाणी।मागशिरमोस इहुधगुणकारीऊइ | माहफागुणइंघाटउरसगुणकरइ | चैत्रवैशाखइंघृत। जेठआषाढइगुलपणगुणक रइ | २

वंतिमानवाः॥१ वर्षासुलवणममृतं। शरदिजलंगोपयश्चहेमंते। शिशिरेचामलकरसो। घृतंवसंतेगुडश्चांते॥२

एषजूसणपर्वदिगंबरनश्जमालिपर्व कहीइ | आजदिनउछवऊइनेदीसरद्वीपनाप्रासादनाआकार करीदेवनक्रीसाचवइ उपवासकरइ अनइंजसोधरनउंचोखि वाचइवषाणइ मोहि लोकपुणसा इवासुदिपांच

इदंचदिगंबराणांजमालिपर्वदिनानिमदोस्ववोनंदीश्वरोद्यापनमुपवासः। यशोधरचरित्रंवाच्यते। लोकेचभ्रा

मिइं ऋषिपंचमी पर्वकरइछेइं ऋषिपंचमीनीउत्प त्तिनीकथाकहीइछ पुष्पवतीनगरीइंएकब्राह्मणनउपुत्र मातापितामरणपा म्या अनुक्रमिइं

घपदशुदिपंचम्यामृषिपंचमीतिपर्वी तत्कथाचयथा॥ पुष्पवत्यांविप्रस्यसुतोऽस्तः पितरौविपन्नौक्रमेणसु

पुत्रनइंघरिपिताबलदश्वयउ | माताकूतरीघरई पितानाश्राद्धनइंदिनिबापमरीबलद श्वांचीनइंसाडइषेडिवा दीक्षउ पुत्रइंलाडा दीक्षुश्वयउ छइ ते

तयरेजनकोबलीवर्द्दोजननीसुन्यरत्। तस्यैवश्राद्धदिनेबलीवर्द्दैःक्षत्रियेतैलिकस्यार्पितः।सुतेनउ

नांदश्राणी क्षीरराधी श्रणिश्लाविकूतिराइंऊपरिधी गरलपडतउंदी छउ अनर्थमदत्तइम विचारीनइंकूतिराइंमुखिइंअपवित्र कीधी ब्राह्मणीवहू इंतेकूतिरीनी

ग्धमानाय्यक्षीरंयीराधिता। इतःसुन्यागरलंपतद्दृष्टं।मान्मदनर्धइतिसुन्यास्वमुखेनतदस्तंकृतं ब्राह्मण्यात

मारीनइंकइ किनागी तेकूतिरीगमाणिइंबांधी मूकी नवोक्षीरराधीनश्ब्राह्मणजिमाड्या बोजनइंभोऊइंत्यश्वबलदश्राणीनश्द्योचोइंगमा लिइं

क्रूटीसत्या।मागमाणिस्नानेबद्धा।नवंक्षीरान्नंपक्वाविप्रौभोजिताः।मायेक्रुधितोवादयित्वाबलीवर्द्दोगमाणो

बांधयउ बलदइंकूतिरी कुखिणीदेषानइंक हिउ पाएइंमादरइ पुत्रइंआज कउंघोचइं तेकूतिरीपुणपोतानीकूइडिना गानोंउघकरतीछई पामइंस तश्तेणइं

बद्धस्तैलिकेनाघुनीकृःखितोदृष्ट्वादृषेणोक्तं।पापेनमयासुतेनादमद्यपीडितःसापित्रास्वस्वरूपमुवाचा तेनसु

पुत्रइं सांतल्यउ जाप्यउंजेएमाबापमारइ राछइ तिवारइंजऊनइंतेबलदकूतिरी नइंषीरराधावसीधी तेमातापितानइंगतिनइं अर्थिइं परदेशजई तेणइंपुत्रइंज्ञानकीधउ ते ऋषि

सुतेनपार्श्वसुतेनकृतं।ज्ञातंमेपितरौइमौ। तदैवोज्झाप्यक्षीरान्नदत्तंतयोःतयोर्गत्यर्थंविदत्रोगचाऋषिस्तोन

कइइ अप्रक्षालइंनादइमाबापइंसोगनीक्रीडाकीधीतिलिबलदकूति रीघया ऊंनाडवाशुदिपांचमिइंउपवासक रिकइअडक धनजिहि जिमतेमाबा पनइंगतिऊइ

ष्टः प्राहीअत्रस्त्रावेक्रीडाचक्रे।आस्तांतेनबलीवर्द्दसुन्योअन्नतो।आक्रुटितान्नेपंचम्यांलुक्ष्णा।यथातयोर्ग

तेणइंतिमकीधउ तिलिलोकमादिऋषिपंचमीचालीं लोकइंदेषविपइतिमकीधउ सर्वदेवइंदेववांदि वा। सर्वसाधुवांदिवा आलोयणलेईपायश्चि त्तनउएकिवजिवउं अष्टमतपनउकरि वउं

सिःस्यात्तदनंतरंलोकेप्रदर्शापंचमी॥ सर्वचित्पवदनंसर्वसाधुवंदनं आलोचनादानं अष्टमतपःकरणं

संवछरी पडिकमणानउं करिवउं लोचनउंकरिव एहवांपजूसणनाद्दकर्त्तव्यनाडवाशुदिपांचमिइंउकत्तुं दीसइछपुण चउघइंनघीकत्तुं नवीआचरणा इंनाडवाशुदि

ध वार्षिकप्रतिक्रमणंपलोचनादिदंपर्युषणंकृत्वानिजनाऽपदशुदिपंचम्यामेवोक्तानिदर्शंते। आचरणया

चउधिइंकरतादीयइ छइ चउधिइंइतेदषाडे एकदाश्रावणपजूसणनइंदिनिआयइछ कइ कालिकाचार्यइंमालवादनराजाइंनुकहि नाडवा

उतदीयचउर्थी। तथाहि अन्नदापाक्षंसवणादिवसेआगए।आक्षाकालएणमालवाएणोत्तणिउ।तद्दवय

शुदिपांचमिइं पजूसणछइतिवारइंराजाइंक हिउपांचमिइंनछाइ पर्युषणाकल्पनीचूर्णिनइं विषइंकहिउंछइ तथानिशीथचूर्णिनादशमाउद्देशानइंविष इंकहिउछइ ते मा

जुन्पंचमीए।पक्षासवणारन्नात्तणिउ। इत्यादि।पर्युषणकल्पचूर्णौ। तथानिशीथचूर्णिदशमोद्देशकेप्युक्तं।तच्च

लवादूर्णराजा | श्रावक नघी | ते कालिकाचार्यत्रा आज्ञाली साहमागया श्रमण यती श्री संघ | महा मंड्राण इनगरि प्रवेश कीधउ

यमालवादूणोराया॥ सोश्रसावउ॥ मोश्र कालएक्कंइंतं॥ साऊणनिगउ॥ अन्निमुहोसमणसंघो॥ महाविन्हईएपवि

कालिकाचार्यइं | प्रवेश कीधा अनंतर कालिकाचार्यई कहिउं | नाडवछदिएंचिमिइंपजूसण ढइ | श्रमणसंघिइंपडिवज्जत्रमा न्यउ तिवारइंराजान घिइंपजूसणकी

ठाकालगक्का॥ पविहेदिश्रसणियं॥ तद्दवयसुद्धपंचमीएपक्खासविक्कइ॥ समणसंघेणपडिवन्नं॥ तादेरन्नातणि

धउं संवछरीपडिक्कमणउं १ | लोच करिवउ २ | श्रट्ठम चैत्यपरिवाडि करिवी ३ | देइ २इ जाइ वउ ४ | मादोमोदिसंघस्पउं सामणो करिवो ५ | १ एहपांचपदाघिनई

श्रं॥ संवत्सरप्रतिक्रांति॥ लुंचनंचाष्टमंतपः॥ सर्वादेज्ञक्षिश्रज्ञाच॥ संघस्पक्षामणमिघः॥१ श्रमीषामेवपंचानां॥

कारणिइं कीधउं | जिनइंगणधरिइंतेण पजूसण नामापर्व ३२ यतीइं | देइ २इ जाइ वउ ४ | २ चउसठिइंइएकठा मिलीनइं | एजूसणपर्वनइंविष इ | नंदीसरादिक नाधिनइं

कारणानोक्तेऊतं॥ जिनैर्गणधरैस्तैस्तैः॥ पर्वपर्युषणालिधा॥२ सुरेंद्राअलिसंज्ञस्य॥ संवत्सरसुपर्वणि॥ नंदीश्वरादिती

विष इ | उलवकरइंतक्किइंकरी ३ | एहएजूसणपर्वनइंविषइंश्रीक ल्पसूत्र सोनलिखउंतेकल्पएहवउ | जिमकल्पेदहमाहिकल्पो यक ढइ | सर्वावालितफलनउदा तिम श्रीकल्पसूत्रमो टउ | जिमउषधि माहि

घेषू॥ सर्वेऊर्वीतिसंक्षितः॥३ श्रत्रपर्वणिकल्पः श्रवणीयः॥ यथाद्रुमेषुकल्पद्रुः॥ सर्वकामफलप्रदः॥ यथौषधीषुपी

श्रमृत | मेकलरोगनउंहर ४ नाहँर ढइ | रतनमाहिगुरुडो झारर्तन | जिमसघलाविष नउटालनारढइ | नउकारमंत्रसघलामंत्र माहि | जिमसघलाश्रर्धनउ साधकेढइ ५ | जिमप वीमाहि

यूषा॥ सर्वरोगहरंपरं॥४ रत्नेषुगुरुडोझारो॥ सर्वविषापहः॥ मंत्राधिराजोमंत्रेषु॥ यथासर्वार्थसाधकः॥५ यथापर्व

८

*यथा+१

दीवालीपर्व | सघलाजीवनइंसुखका राढइ | तिमसघलाधर्मशास्त्रमां हि श्रीकल्पसूत्र | सघलापाधनउहर नाहँर ढइ ६ | जिमसणनउ कल्पश्रा चार | पापटालिवाश्रा दरवंत ढइ स

सुदीपाली॥ सर्वोत्तमसुखावहा॥ कल्पःसद्धर्मशास्त्रेषु॥ सर्वेपापहरस्तथा॥६ कल्पःपर्युषणालिधः॥ कलिमलप्रध्वं

मर्द ढइ | कल्पश्राचार सर्ववांछ्या मनोरघपूरुचाडिवाकलियुग मांहि कल्पवृक्षसमान ढइ | नेकल्पसूत्रवांचइंजेसविकजीवश्रादर करीक ल्पसूत्रसांनलइ | तेजीवक

सद्वादरः॥ कल्पःसर्वसमीहितोदयविधौकल्पद्रुकल्पःकलौ॥ येकल्पंपरिवाचयंतिसविकाःशृण्वंतियेचादरागत्तकल्पे

ल्पनादेखोकनांमुखसोभव मुक्तिपा मइ ७ | श्रीमहावीरदेवनाचरित्रस्थापेउं बीजजालिवउ | श्रीपार्श्वनाथनाचरि त्ररूपीया श्राछराढइ | नेमिनाथनाचरित्ररू पेउघडजाणिवउ | श्रादिना थनाचरि

पूविकल्पसूत्रिविनतोऽगेसदामेरतो॥७ श्रीमहावीरचरित्रबीजमत्तवत्॥ श्रीपार्श्ववृक्षांकुरः॥ स्कंधेनेमिचरित्रमादिमजि

त्रनोरूपीयाशाखानामसूद्र जालिवा | घविरावलीरूपीयाफूलजा लिवा | हेयज्ञेयउपादेय रूपीउ | परिमलजा णवउ | मुगतिनासुखमामी इतेफलजाणिवा | श्रीकल्प सूत्ररूपीया कल्पवृक्षनइंविषइ

नमाख्याचशाखाचयः॥ पुष्पाणिसुविरव्रजश्चकथोपादेयहेयतथा॥ मोरसंफलमत्रनिर्दृतिमयंश्रीकल्पकल्पद्रु

८ | श्रीरिष्टनेमिपरांतिको ईमोटउ देवनही | सुगतिऊपरांतिको ईपरमपदध्यानकनही | श्रीशत्रुंजयउपरांतिको ईमोटउं तीर्थनही | तिमश्रीकल्पसूत्रथीश्रनेरउ सिद्धांतमोटउकोईनही ९ | सघलापुष्पमांहिमोटउं पुष्पश्रीकल्पसूत्र | सघला सिद्धांत

मो॥८ नार्हतःपरमोदेवो॥ नमुक्तेःपरमंपदं॥ नश्रीशत्रुंजयात्तीर्थं॥ श्रीकल्पान्नापरश्रुतं॥९ एपुण्यानामुत्तमंपुण्यं॥ श्रुता

मांहिमोटउंसिद्धां तकल्प | सघलेध्यानमांहिमोटउं ध्यानकल्प | तीर्थंकरइंश्रीकल्पसूत्र एहवउमोटउकहीइ १० | श्राचारपालीइतपकरीइ नेकल्पकहीइ | कल्पश्राचार तेवांच्याकल्प वृक्षसमानकहीइ। | कल्प श्राचा

नामुत्तमंश्रुतं॥ ध्येयान्नामुत्तमंध्येयं॥ जिनेःश्रीकल्पउच्यते॥१० श्राचारान्नपरमाकल्पः॥ कल्पःकल्पद्रुरीरितः॥ कल्पो

BHAU DAJI

तेसा च उरंगं क हीइ | कल्पसूत्र तच्च अर्घ नउदी पावक छेइ | ११ | तपइं करी वलचर्यं इं करी | सुवर्ण दानिइं करी हुगोत मु | तीर्घइंकर तउ जे वजेत लउं कर्म षपावइ | तेतलउं कर्म कल्पसूत्रइं

रमायनं सम्यक्। कल्पसूत्रार्थदीपनः॥ स तवेणं वंसचरेण। कणयदाणेण गोइमा। कम्मं खवेइ जे तिव्वं। तं कप्पस

करी षपावइ | १२ | जन्म घर्की जे श्रावक नइं | सम्यक्त्व सेवता घर्का | जेतलउं पुण्य होइ हुगो तम | तेतलउं पुण्य लाभइं कल्प सोनलतो होइ | १३ | रेवतं जया

वणेणयं॥ १२ अजमं जम्म सहस्सा। नम्मत्तम्मि निसेवणा। जेपुसं गोयमा होइ। तं कप्पस्स वओणायं॥ १३। रायुंज

दिक तीर्घ मांहि | सोनानी कोडि नो दान घर्कु | जेतलउं पुण्य होइ तेह घर्की अधिकउ | श्री कल्पसूत्र सांभल्यइं पुण्य होइ इम मनुष्य नइं | १४ | जिननी आज्ञा पालिवा घर्कउ पुरुष नइं पुण्य हुइ

यादितीर्घेषु। सूर्ण कोटि प्रदानतः। यत्पुण्यं प्राप्नुयादधिकं। श्री कल्पाकर्णनान्नृणां॥ १४ जिनाज्ञा पालनं पुंसां। स

चन काया इं सम्यक्त्व निश्चा राधना घर्क इंछ | जेतलउं पुण्य हुइ तेह घर्की श्री कल्पसूत्र | सांभल्यइं आगुणउं पुण्य हुइ | १५ | देवनी हुजा दयानउ पालिवउं दाननउं देवउ | तपनउं करिवुं उंयाचा दिक | जावजे तलउं

म्यक्त्वाराधना त्रिधा। पुण्यं स्तवति यत्कल्पा। दतेरष्टगुणं हितत्। १५ देवगुरुजा दयादानं। तपोयाचा दिकर्म सिः। कर्म

कर्म षपावइ | तेतलउं कर्म जाव कल्पसूत्रना आराधना इं षपावइ | १६ | जिन शासननइं विषइ ए काग्रचित्त एकमना घर्का | त्रिनावनाइ जाननइं विषइ ततपरमा वधान घर्का जिजीव | एकवीसवार क

क्षिपंति यत्क्षीवा। स्तत्कल्पाराधनास्फुटं॥ १६। एगग्गचित्ता जिणमासणंमि। भत्ता वणाइ प्पराय णा जे। तिसत्तवारं

ल्पसूत्र सांभलइं | हुगोतम तेजाव सवसमुद्रवे गउतरइ | १७ | प्रकरणइं योच दिनकल्पा उइ बीजा परिइं मनिमान | तिहों कल्पसूत्र सांभलइ मोक्ष गामी नउ एकल्पमार्ग अछइ | अमारि प्रवर्त्तावइ नइ

निसुणंति कल्पं। सवसवं गोयमते तरंति॥ १७ पंचसिंदिवमेः कल्पः। कल्पो मोक्षस्य गामिनां। अमारिं कारयित्वाहेः।

श्रावक इएह कल्पसूत्र मां सलि वइं | १८ | कल्पसूत्र सांभलिया नइं विध इ एविधि जालिवउ | श्रुत ज्ञान नी भक्ति कीज इ | तप कीजइ। अमारि प्रवर्त्तावइ | दान दीजइ इम भावना क

श्रोतव्यः श्रावकैरयं॥ १८ कल्पश्रवण चायं विधिः॥ सुयनाणस्स यसत्ती। तवो विहाणं अमारि करणयो। दाणपसावे

रइ छइ जि नप्रतिमा | नी घर्जा भक्ति कीजइ संघ नी भक्ति मेवा कीजइ | १९ | अगदा घीन चित्तइं हीइ कीजइ मन करीइ क्रोध तिरस्कार | ऊशीलन इं आरं सटा लाइ | इव्यइं दान पुण्य करइ उल वेकरइ आचार पालइ | यथा शक्ति तप करइ ज्ञानादिक गुण आराधइ

णजिणे। सुआसंघस्स सत्तीय॥ १९ सचित्तेत्यजेन्मेधा। ब्रह्मारंभ विवर्जनैः। इव्यव्ययो सवाचारे। यथा शक्ति तपोगुणैः

२० | वांच वाघर्कउ | वाचनारनइं मां हिमां हिमा इव्यदेवा घर्कउ | सर्व अक्षर नामोनलि | विधिइं कल्प आराधइ घर्कउ | आगलवमां हिमुगति आपइ | २१ | एहपजूसणनइं वि षइ अष्टमतप क

२० वाचनादात्रे। सर्वाक्षरक्षतेरपि। विधिनाराधितः कल्पः। शिवदोतर्त्तवाष्टकः॥ २१ तपश्चाष्टमकादि

वि धेउ | ज्ञानदर्शन चारित्र रूप रत्न त्रिणि आराधिवा निमित्तिउ पर्यासत्रिण्णि कीजइ। अथवा त्रिण्णि उपवास करिवा | अथवा अष्टैमनवचनकाया नापापनामल धेइवानइं काजि इं त्रिण्णि उपवास सगर्वं तिइं दाखिउ छइ | अथवा त्रिण्णि नव पोरिज करिवा | तणी कीध

यैः। किं रत्नत्रय सेवनं किमथवाल्पत्रयोन्मूलनं। किंवा चित्तं वचो वपुः क्षमल प्रक्षालनं सर्वतः। किं जन्मत्रय पा

। अथवा मुगतिपामिवा नइं | कीध छइ | धन्य तीघकर इं कल्पयुगनइं विषइ पजूसण पर्वना | २२ | पजूसण रूप महा पर्व आख्यइ घर्कइ

वनं। किमसवद्धिमत्रयाप्तपदं। धनैर्यद्धितं कलावपि जिनैः पर्वोपवासत्रयं॥ २२ मंत्राने चमहापर्वण्यस्मि

नावसहित | करिवउ विधि मांइं करी नाग केतुनी परिश्रेष्ठ मतप | तिकथा कहीइ छइ | चंडकौशिक नागराइं विजयसेन राजा राज्य करइ | श्रीकांत छइ त्रिष्टि

नूविस्मेरसावनैः। विधेयं विधिना नाग केतुने वाष्टमं तपः तत्कथा यथा। चंडकौशिकभुयी विजयसेनोराजा। श्रीकांतः

अष्टी। श्रीसखीनार्या। तयोः पुत्रः। पर्युषणापर्वण्यष्टमं करिष्यामीति कुटुंबसाक्षितो ऽक्षा। जातजातिस्मृतिः। हताश्म
तपः स्नान्यमपिना विषन्। पित्रादिभिर्बलेन चारकरणेपि ततो मूर्छयानिश्चेष्टबाले ऽस्मिन् खात्पितरि रुदियस्फोटेन मृतो। तस्य
जनो बालेन्द्रविक्षिपुः। ततो धरणेंद्रविधनाविज्ञायतत्स्कंधमेवामृतेनाजीवा। पुत्रत्वेनाश्लिलङ्गणङ्गा नानाराजपुरुषान्
पुरुषरूपेणवारयन्नराज्ञाष्टमं श्रुत्वा पुत्रजातंतत्रवाक्षप्यदुःखितंप्राह वादिकमबंधमाह। अयंबालः प्राग्भवे बाल्यमृत
मात्रकोविमाटकृतापमानेननित्यरुनः स्वमित्रंप्राहवत्समासर्व ऽस्मिन्परियद्या शक्तितपऽद्यत्पदा। अमलेपर्युषणा
पर्वदिनेष्टमतपःकरिष्यामीतिध्यात्वेनायावतापूर्णगर्भसुप्तापा तावतासन्नमपदीपनलनविमात्रातन्मरणायतप्तऽस्मोक्षिप्त
तृषाध्यानेकचित्तस्तद्यामविज्ञायमृतोऽपुत्रमश्रीकांतमप्रश्नेनःसुतत्वनज्ञा ततः सर्वसंस्कारात्पर्युषणादिनेक्षजोतजा
तिस्मृतिःहताश्मःस्नान्यमप्यविबना मूर्छयामृत इतिज्ञात्वास्वजनेःस्वरुक्षाःमयाऽमृतिर्नजल्पितेइति। ततोधरणेंद्रोबालो
यदारुदद्यांशिरोदधे। इतिकृत्वाराज्ञामविस्मर्योयत्नेनायंरक्षयुःपाल्यःइत्युक्त्वाजनन्यैआर्यपतातः स्वजनैर्नागकुमरितिदत्त
नामाबालोप्यनन्मनःचक्षुःश्रवो-घ्राणरसस्पर्शपर्युषणायाचाष्टमऊर्ध्वनमामायिकपोषधब्रह्मचर्यादिनिश्चयावनपू
र्तेडियेजज्ञे। अन्यदाराज्ञाव्यापादितेननकेनापिचौरणव्यंतरीकृतनाहस्त्यनपक्षिनाकृत्स्नविपातितोराज्ञाचक्रंदलोकक्षसं
घोविनगरापरिमरुतोविलविलुठंश्चिरंसापयामासतं तोनागकुमरउत्पन्नावधिनाभवजिनप्रासादप्रभारुंधेयउच्चैःप्रभा
रारूढस्तापः शांत्यातापतंतंकरेदध्यातत्तापमानिरुद्धांतरःक्षिलोमंकृत्वतेनचानृपंवटहत्यस्वस्थानमगमत्ततो तृतो
रूपादिमान्यो नागकुमरेंद्रोजिनप्रभाऊर्ध्वनापुष्यस्थमर्पणदृष्ट्वाधरणेकाम्राऽत्पन्नंकेवलज्ञानः॥ शासनसुरदत्त
वेषश्चिरंस्थानप्रबोधयामास। इतितापमिनागकुमरेंद्रकथा॥ मद्यनरेणजाऽऽकावालुया। सद्यउदीर्णजेतायातोअण
तगुलिऽअक्षोइक्षमसुखम्॥१ वदनेरमनामैतत्सर्वाद्यदिमनिमलंकेवलंहृदितदिदंगदित्तेनपरया। म्यपिकल्पाम्यमृ
षैमात्मना॥२ बालस्त्रीमंदमूर्खाणांनृणांचारित्रकांक्षिणां। अनुग्रहार्थंतत्त्वज्ञैःसिद्धांतः प्राकृतःकृतः॥३ अथ चूर्णादि
ज्ञाऋतस्कंधस्योद्धारमध्ययनेअस्मिन्नुद्धाऽस्वामिनिःप्रत्याख्याननवमसर्वा ऽहतः। द्वाविंशच। १। २। ४। ८। १६। ३२।
६४। १२८। २५६। ५१२। १०२४। २०४८। ४०९६। ८१९२। सर्वसंख्या १६३८३ ज्ञात ३ एतावद्भिःप्रमाणैर्मिश्रपुंजले

॥ अर्हदंग
दृष्टिवादो ज्ञाश्च
१ दृष्टिवादांग
पंकुंबुजेल
स्थकंगाः। दृश्यं
यंयस्करंद्र
व्यापन्नमान
विदाश्रुनो॥
कमलनालद
ण्डा ३० प्रत्यक्ष
श्री १५ गुणा
कार इंद्रियेंत
तमाता आवद
इ॥ ३

॥ अर्हदंगदृष्टिवादो ज्ञाश्च। १ दृष्टिवादांग पंकुंबुजेलस्थकंगाः। दृश्यंयंयस्करंद्रव्यापन्नमानविदाश्रुनो॥ कमलनालदण्डा ३० प्रत्यक्षश्री १५ गुणाकार इंद्रियेंतत्तमाता आवद इ॥ ३

॥ अर्हदंगदृष्टिवादो ज्ञाश्च। १ दृष्टिवादांग पंकुंबुजेलस्थकंगाः। दृश्यंयंयस्करंद्रव्यापन्नमानविदाश्रुनो॥ कमलनालदण्डा ३० प्रत्यक्षश्री १५ गुणाकार इंद्रियेंतत्तमाता आवद इ॥ ३

॥ अर्हदंगदृष्टिवादो ज्ञाश्च। १ दृष्टिवादांग पंकुंबुजेलस्थकंगाः। दृश्यंयंयस्करंद्रव्यापन्नमानविदाश्रुनो॥ कमलनालदण्डा ३० प्रत्यक्षश्री १५ गुणाकार इंद्रियेंतत्तमाता आवद इ॥ ३

आदिनाथनइवारइएकइसम श्रीतलनाथनइवारइहरिवंश यादवनउ वंश हुउ | नेमिनाथनइवारइइक्ष्वाकु अपरकंकानगरीइ गया ४ श्रीतीर्थंकरमल्लिना थ हूया असं ख्यती

।रिसहिअइहियसयंभि इं। सीअलजिणेमिहरिवंसो।नेमिजिणेवरकंका।गमणेकण्हस्समप्पत्ते॥४इक्खीतिछेमल्ली।इ

नाइजानवमासुविधिनाथनइवारइ बीजा अंतरा श्रीमल्लवीरनइवारइहूया ५ चउवइलक्षीनइ लक्ष्मीऊंचइगा हिमवंतपर्वत

आ अमंजयाणनवमेजिणे।अविसमाअंतरा।वीरजिणेदसमंतिछमि॥५ उर्यलक्ष्मीस्वयं॥ उच्चागपति।हिमवतिच्च

नइविषइ हिमवंतमाउयोजनउं एकसउअनइबावनयोजन अनुश्रेढकला नेहिमवंतपर्वत ऊपरियुगलइदहोयो एकसउयोजनलांबु पांचसइयोजनपद्मनइ

वज्रमयतल उंचइ वज्रतले ५ लंबेय। योजन१०० उच्चैः। ए।१०५२या० बारकुलाइघो। पद्मकंदः दशयोजनो हेधः। सहस्रयोजनलंबः। पंचाशा

पिछलउ उंचइ तेउसमा दिएकुमादेवी दशयोजन नाल जुलुघु बिकोशएकयोजनपिछ कमलपत्रयो॰ यु। वज्रमयमूलउंचइ अरिष्ट

तयोजनइघुः। तन्मध्येपद्मनामकं।दश१०योजननालं।२क्रोशोच्चं।योर्इघुलं। योजन१दीर्घो।वज्रमयमूलं। रिष्ट

रत्नमयकंदउ नीलरत्नमयनालउंइ रातासोनामयबाहिरिलापोषडो जांबूनदमयअभ्यंतरपोषडो सोनामयकर्णिकाउंइ बिकोशउंचोउंइ

नमयंकंदं। नीलरत्नमयनालं। रत्नसुवर्णमयबाह्यपत्रं। जांबूदमयाभ्यंतरपत्रं। तत्रसुवर्णमयी कर्णिका।२क्रोशोच्चा।

रातासोनामयकेसरापराग तेहमांहिअरविंदनउ घरिछइ एकक्रोशलांबुउं अर्धक्रोशविछउ चउदसइचालीसधनुषऊंचउ इहविदिशा।दक्षिणदिशि

रुक्मसुवर्णमयंकेसरा। तस्यामध्येश्रीदेवतासदनं॥१क्रोशदीर्घो।क्रोशार्द्धघुः।किंचिन्मूलक्रोशोच्चं।इहदक्षिणेन

उत्तरदिशिविदिशिलीवारणा। बेउरणाएचसुइधनुष अर्द्धसुइधनुषविछेरा सदनमाहिअर्द्धसय। धनुषनीवेदिका

रदिक्षुद्वारालि।५००धनुःउच्चानि। २५०धनुःघूनि॥ सदनमध्ये२५०धनुर्मालवेदिकातदुपरिश्रीयोग्यंसदनीयं।

मुख्यकमलंपरितः।श्रीदेव्यानारणजतानिनदर्शमानानि।१०दप भानिवलयाकारालितत्परितो।२वलयेवायव्ये

शानेत्तरदिक्षुधसहस्रसामानिकदेवप भानिधसहस्रा इहदिशिधसहस्रा दक्षिणस्यांमित्रस्थानीयामध्यमपर्षदा० सहस्रदेवानांकमलानि१०सहस्र।

तरपार्श्वेदसहस्रदेवानांकमलानि।८सहस्रा दक्षिणस्यां।मित्रस्थानीयामध्यमपर्षदा० सहस्रदेवानांकमलानि१०सहस्र।

नैऋत्यांकिंकरस्थानीयबाह्यपार्षदा।२सहस्रदेवानांकमलानि१२सहस्रापश्चिमायां। दंडप१सह२रक्ष३पदातिधमहिष५

गांधर्वदनाट्य७।रूपसमुत्कटकाधिपानांपद्मानिसप्त। २वलये।१६सहस्रोगारुडदेवानांपद्मानि॥१६सहस्रोच

ऊर्ध्वबलयो२रलक्षालियोगिकदेवानांपद्मानि।३रलक्षा।५वलये४०लक्षालियोगिकदेवानांपद्मानि४०लक्षाः।६

वलये४०लक्षालियोगिकदेवानांपद्मानि४०लक्षा। सर्वसंख्यया१कोटि२०लक्ष५०सहस्र१शत२०अधिकपद्मानांस्वामि

नीश्री॥१०सचपद्मसमरोव्याख्याने। हंसाकलहंसाराजहंसाचकोरचक्रवाकाचाषाचातकाक्रौंचाकूपोताकपिंजलाकल

विंकाकलकंठनीलकंठाऊर्कटाकोशिकाकोशिढकाऊकराकारंडुचासारसाऊलूकाकादंबाकबरिकाकाबकाबलाहका

लावकातित्तिराहंसासेरवासारहजा शुकाशारिकासंकुनिकासिंचानकाप्रमुखपक्षिऊलसमाऊलं॥१३रत्नराशिस्व

रूपा नीलमहानीलामरकताकर्केतनापद्मरागपुष्परागवज्रावैडूर्यासूर्यकांताचंद्रकांताजलकांताश्रीकांताशि

वकांताशिवंकरा।प्रियंकरा।नयंकरा।क्षयंकरा।आयंकरा।रागकरा।विश्वंभरा।ज्वरहरा।मूलदरा।विषहरा।सौभाग्यकर।

धृतिकरा।पुष्टिकरा।चंद्रप्रभा।सागरप्रभा।प्रभानाथा।अशोकावीतशोका।अपराजिता।गंगोदकासमाराग्नला।हंसगर्भालो

हितांकासुनासकर्कोटापुलकारुचकासौगंधिकासुनगा।गोमेधाअंजनाज्योतीरसाअंकस्फटिकाचिगुणमालिकाश्रीयुमा

लिदेवानंदाविशिष्टरत्नाचितारत्नाप्रमुखविशिष्टरत्नानि॥ ॥

रुषीसुहिणइरावणतिलिंगो वृषभइधर्मधुरंधरकुंजरइसूषइषभाजला मीदइंद्रायरहितअनइ सूरवीरकुंजरइ श्रीनइमुहिणइत्रिलिंगुवन नेमीश्रीवंतकुंजरइ १ मालाइंद्रजसपुरुष मालिंगिरोमलिकुंजरइ चंद्रमा इंद्रो ← संपदाते ह+२

गजेनविश्वंशौंडीरो।धर्मधुर्योवृषेणच। सिंहेनविक्रमेशूरः।श्रियाविश्वश्रियांचित॥१स्वजामूर्द्धपरिमंता।शशि

शिइंजोतांअमृत समानजिनकुंभ सूर्यइंअज्ञानतिमिरन उहरनारकुंभइ धजाइंकुलनइंविषइंमु गटसमानकुंभइ २ ऊंनइंगुणइंकरीन रथरकुंभइ पद्मसरोवरइंजगचना संतापटालिंभइ प्रभुइंमोटउगंनी रजंभइतोबउउनहोजइ

नानेयनामृतांसूर्येणतमसांहतीं।ऊलोहंसोध्वजेनच॥२ऊंनेनगुणमैश्वर्यैः सरसाविश्वतापहृत्।वार्द्धिनागुरुगांनी

विमानइंदेवतानइंइजिवा योग ऊम्पइ ३ रतननइंढिगइंमहा धनवंत ऊम्पइ निधूमअगनिइंतेजवंत प्रतापी ऊम्पइ चउदराजलोकनउं स्वामीधणीनारउपुत्र ध अथवा ॥ चली पुहिणो बीजउ अर्घकरी वृषभणहल

रो विमानेनामराश्रयः ॥३ महत्वैरत्नपुंजेना दीप्तो निर्धूमवह्निना चतुर्दशरज्जुलोकस्य स्वामी सावीतवांगजः ॥ध अथवा

माहरउस्वामीइंइतेदनइंमेविवायोग ऊम्पइ। चउदंतउदाढीतेदनादइंधनघकउच्चारिप्रकारधर्मनउउपदेशकरइ १ माहरापरिइंइमानउ
म्पइ। त्रिशालारालीनइंएहवउंकहिवानणी जाणीइरूघीमुहिणामाहिआवउ छइ

*६-२ मंत्र्यामिसेवोनावीतिवक्तुमिवचतुर्दंतमदालोकनाच्चतुर्विधधर्मोपदेष्टानावीतिशोभितेवृषेरावणः ॥१ महत्क्रमा

*त्+३ नारवहिम्पइनरतथेचमाहिबोधिबीजवावम्पइइमकहिवाजाणीइहषभमुहिणामाहिआवउछइ २ माहरीपरिइंउष्टकर्मरूपीयारूघीनउहणनारऊम्पइइमकहिवाजाणीमाहिआवउ ३ एलगवंतनाआश्रयिवाघकउमाएरउंचपलपणउंटलिम्पइअ

भारवारीसरतेबोधिबीजवापीतिवक्तुंइषभः ॥२ महंउकर्ममलनहंताभावीतिसिंहः ३ अस्याश्रयणाच्चापल्पेयाम्प

घवावरमीदाननइंअवसरइंमुनइ ४ एलनगवंतऊताघसफलकरिम्पइनाईइमकहिवाश्रीदेवीआवीछइ ४ माहरापरिइंकीर्तिइंकरीमुगंधऊम्पइइमकहिवाजाणीइमालोआवीछइ ५ एलनगवंतनामुखनीऊंउपमापामिम्पउइ

तिंवार्षिकदानावसरेमानेषः। हतार्घयिष्यतीतिवक्तुंलक्ष्मी ॥ध महत्कीर्त्यासुरसिन्नीतिसिंहः ॥५ अस्यमुखस्योपमा

मकहिवाजाणीइचैइमाआवउछइ ६ माहरापरिइंमोदरूपलीराखिइलिम्पइइमकहिवाआवउछइ ७ धर्मधनइंइधनइंकरीशोभितनगवंतऊम्पइइ ८ धर्मरूपायाग्रामादनइंशिखिरइंवइसिम्पइइमकहि

नंसविष्यामीतिचंद्रोद्य महन्मोहरात्रिरंतेतिसूर्यः ॥७ धर्मध्वजेइधजादिस्तेषतोनावीतिध्वजः ८ धर्मप्रासादशिखरेस्था

वाजाणीइओक। लशआवउछइ ९ जगंत्रनीइक्षाइषासोजम्पइइमकहिराजाणीइपमरोवरआवउछइ १० माहरीपरिइंगुणरूपायारतननउघानकअइगंनारऊम्पइइमकहिवाजालीइमुडआवउछइ ११ माहरापरिइंश्रभागीयाजिननी १२

तेनिकलशाः जगतस्तृक्षांछेतेतिपद्माकरः ॥९ महत्कुणरत्नानांस्थानंगंभीरइत्नसावीतिसमुद्रः ॥११ महन्निर्लोभेउ

मेवादोलिणीमिम्पइइमक दिवाविमानआवउछइ १२ माहरीपरिइंजगत्रनइंशोनाचडावम्प इइमकहिवारतननउढिगआवउछइ १३ एउंजिमइंधणबालउंतिमनगवंतकर्मरूपइंधणबलिम्पइअनइ मुगतिनगरीइंचालतानइकल्याणकारीऊम्पइ

लंसोनावीतिविमानः ॥१२ महत्कगडूषोकान्तेतिरत्नाशिः ॥१३ महत्कर्मेधनानिधक्ष्यतिशिवपुरप्रस्थायिनोकल्याणछ

त्रिशालानइंइमकहिवाजाणीइअगनिमुहिणाइआ १४ तेमुएनपाएकपोलिइंएकगइमिल इंपुणअमंबधअणमिलतानथी हिवइंअमिलताकेइतेकहियइछइ राजानइंप्रधनइंणेचमइंविचिइंएकत्र णा नउ मनेएकेराया छइ परीक्षाअ

वसावीतिवक्तुमिवक्ष्मीजःस्वप्नेसमागात् ॥१४। एगउमिलतितिनपुनरबधा। राज्ञोमध्येपरीक्षतइत्योकराय्य

मिलताजाणीबोद्युतिम अमिलतानहोइवउ स्वप्नाकारणउकहइ छइ नौन ऊम्पइ कमुर नौगमऊम्प हिणउलहइ २ नौगमऊम्प हिणउलहइ ३ वीतब्य उमुहिणा ३ वातपित्तश्लेष्मा दिकविकारइंमुहि लहइछ णउलहइ ४ देवतादे पुष्पनउ

वलंगकपंचशतीवत्। स्वप्ननिदानानि नव। ऋतामनुस्तंरप्रदर्शनइंमनुष्यचिंतापप्रकृतिविकारोद्देवाः ७ पु

मुहिणउ लहइछ ६ पापनउंमहि णउलहइछ ८ धन्नेणेवद्दामोति॥ सालि१जव२बीहि३कुद्दव४रालय५तिलद६मुग७मासद८चवलए९चिणा१०चुब

रि११मसूर१२अलसा१३गोजम१४निष्पाव१५अयसि१६इमणा१७॥ १ यधा धनाइंस्वउबीसं॥

ष्पानिछ पापानिए॥ धजव१गोजमर मालिइ वीहिध सठिका५ कोद्दवद्दअणुआ७ कंगू८ रालय९तिल१० मुग११

मासा१२ हरिमंथ१३ अयसि१४ इति उका १५ निष्पाव१६ सिलिंद१७ रायमासाय१८ इक्कु१९ मसूर२० तुवर२१ अलठ२२

तद्दयधन्नय२३ कलाया २४॥ हरेमेसगजेइत्यादौ। त्रिशालास्वचिंतने। यदिसत्यमिदं॥—

नइमा चउत्थव उ गर्भगलंतउपडुउमउवि छूटउकिमइएह तउनिश्चइंहुउंअनागिलो सागरहितघई इहविधीमोहिपुण्यहीनमो हिमएपुण्यहीनतेहउंछउं अथवा अनागीयानइघरिचिंतामणि रत्ननरहइनहीएतावतारांकनइ

जइ। गर्भेस्थास्यकथंचन॥ तदानूनमनागोहंनूमोनिःपुण्यकावधिः॥ यद्वा॥ नस्यस्याप्यस्यनिकेतनेचिंतार

MEMORIAL

मइंस्यउं मइं अंडा सहित कीडीनो विवार बि ल जल रेडी वहुड्या रत्या करुतां | अथवा तिजी वनो इंडो अलगो हूका मोकूतो | अथवा स्यउं मइं सूडा कबेरे मोर कूकडा दिकनइं मा तामा घि

वा कीटिका मांऽकवि वरा णिल्ला विता नि। तदेऽकानि वा मोचि ता नि। किंवा शुक सारिका ऽसम्यूर ऊर्ऊटा रीनां शिशुनि

नियोग दीधउ करुतउ | अथवा अथ वा स्यउं मइं इंडा सहित बालक सहित पंषीया नामा लापाड्या करुतां | एणए धर्मनी बुद्धि इसवां तरे कागडानां इंडां फोड्यां | अथवा. स्यउं मइं

वियोगादत्तः किंवा नीडानि मांऽकानि सशिशूनि वा पातितानि। किंवा स्फारितानि। धर्मबुध्या कांक्षा नि। किंवा बा

बालक हत्या कीधी करुतो | अथवा स्यउं मइं मउ किना पुत्र पुत्री मगो ऊपरि ऽष्ट | अथवा स्यउं मइं गर्भ नो घात ण सो डिवा पाड ण समा चस्या करुता | अथ वा गर्भ न

लद्धत्या विहिता। किंवा मपत्नी पुत्राद्युपरि ऽष्ट चिंतितं ऽकृतवा। किंवा ग्रैस्तेन शातनपूतनानि समाचरितानि। तमि

पाडियो मंत्र घ्यु ज्या करुता | अथवा स्यउं मइं गर्भ नी पाडिवनो उप धउ पदिश्या कस्या करुतां | अथवा स्यउं मइं केदना बालक नइं विष इ करी कोडी आ प शाप दीक्ष करुतां | अथवा स्यउं मइं केदना बालक अनेरला

त्रायाघ्युक्ता। किंवा तदौषधान्युपदिष्टानि। किं कस्याऽपि त्रियो विषयं गुलीं न्यक्षा शापः प्राद्यर्य। किंवा मया राज्ञा

बालक अलगां नाष्या नष्या करुता तेणए लागां | अथवा स्यउं को ईऽ कि विरा धउ ऽकृतउ तउ तेणए आप दीक्ष जे आम ऽख पडुउं | अथवा स्यउं मइं अनेरउं को ईऽ शील खंडना दिक

वस्पृक्ता स्पाजिता वाऽप्यसकृ। किंवा त्रासा विराद्धेनाकृतापि कृपिणा। अथवाऽन्यथा किमपि मया पातकं शील खंड

महापाप समाच स्चउं ऽकउं | निलिकारणि प हवा अनंता | ऽख नी षालि कीधी ऊंपणि इं दैव इं चूंड इं | निलिकारणि अरे दैव निःसंकदया रहित करुणा रहित | पापी चूंडा

नारि समाचरितो। यदीदृग् विधनो। ऽख खानिः कृताऽस्मनेन ऽदैवेना तदरे दव निर्घृण निर्हृय निः करुणा पापिष्ठ ऽदुष्ट

दुर्जन मांहि शि रोमणि | निकर्की | पाकुओ कर्मना करण हार | अपराध विनालोकना मात्र रणहार | स्त्रीवंता चालता पाप | विश्वास वंत जन ना घात ना करहार | अकार्य नइं विष इ सावध

अशिष्ट। अदृष्ट। निघृण। क्लिष्ट कर्मकारक। निरपराध जन मारक। स्त्री निसत्पातक। विश्वस्त जन घातक। अकार्य स

न लाजर हित | मुकनइं चूंक्यउं निःकारण व यूरी घइ ब इ | एहवाऽः खरूपीया समुऽनइं विष इ घालिव इ करी न इ | अथवा अरे दैव तइं ताद्दउं स्यउं विण साद्युं ब इ | जेउंकहिस्युं

ऽकानि लज्जि का। किं मे निःकारणे वैरी स्त्वसि। एवं विधऽः स्वसाग रावतारणे। किंवा रे दैव तवापरा द्धाय न निवेद

नथी | प्रगटी घइ नइं मा हूआमा स्लांकर्हव्य | अंतर्गडनी परि इं स्यउं मंता पइ ब इ | अथवा दैव नइं षोटउ लंसा दीध इ स्यउं होइ | अथवा विलाप कीध इ स्यउं दे इ

यमि प्रकटी स्त्वयऽष्टा निमद्धेष्टितानि। किंवा तर्कुडिंडवयसि। अलेबाली के दैवी पालने:। किंवा परद्वेषेतेन।

जीवा नी षपन थी | अथवा प्राण त्यागि इं करी ऽख ना समूहनी समाधि ऽख नउ नाम करउं इम करी | तेमरिवा दौडती ढती अरडी परडी हूयूघ टोलामा दिधी

पर्याघं जीवितव्येना करोमि वा प्राण व्यपरोपणेनै ऽख कोरुपरि ऽमासमित्युन्मनायते। तच्चिकीर्षुरितिस्त तोयूघ

स्रष्ट स्त्री मृग लीनी परि नमइ | तेद्रवि त्रिबाला दीगडा ही चउरसखी इम खीनइं दंदइं दीधी | ऽख नउं कारण वि मूलानइं

स्रष्टु मृगीव बंधन मीति। ऽष्टा चतथा रूपास्य रूप निरूपण चतुरेण सखी परिकरेण। ऽष्टा च दोमनस्य कारणो।

तेत्रिबाला आंसू झरती निमा झूंकती बोली | बाई ऽउं स्यउं कहुं | ऊं अस्ता गिली जेमा हरउ जीवितव्य गयु उं | सखी बोली | इम खिस मांगलीक वचन रहिवा द्यउ

उवांच च मा मुनिःश्वासं। यथा किमहंवदामि। मंदस्याण्यकृतामि मेजीवितं। सख्योजगुः। ऽसखि शोतम मंगलं २

करुउनइगर्जनइंऊशालछइ त्रिशला बोली | हेमर्षोलजनउगर्जनइंऊशालऊइतउविलाप ऽखकिरुं कीजइनकीजइज | तिणिहाखेदे ऊं हुणी | हताशइंस्तउइदैवइंमर्वस्युहरिवइ करी इम कहीनइं मूर्छोली

वर्तेतगर्जस्यऊशलंप्रोचो हेसखीगर्जऊशलंकिं परिदेवनीयमस्ति। ततो हाहाताकृता द्रुतं दासीजनेन देवेनमर्वोपचारकरणेने

छतीस्मिरंपडी | वलीसखीस्वेदनादिकरइंशीतलतादिउपचारकीधा अनंत तैरचेतनालहीनइविलापकरइ त्रिशला | चिरलगी सूनइचित्तइंबइ मारहइ | घणुं मूर्छीती छती

मुक्तासूमोमूर्छिताप्रतिं। पुनःसखीभिःशीतलोपचारलब्धचेतन्याविलपति। शून्यचित्तंचिरंतिष्ठति। बऊइ

रोतीघकीगर्जनउमरूए करइ | वलीमूर्छीपाईपडइ | वलीशीतलउपचार कीधा अनंतर ऊठी बइठीघाइ | वली विलाप करइ | तेगर्जन उअऊ

ष्टाचस गऊदगर्जस्वरूपंकथयंतीपुनःमूर्छितासतिं। पुनःशीतोपचारासमुन्मिषंतिं विलपतिस्मचा तत्क

शालमांसलीनइंविलापकर इसखी आदिदेइ | सघलउएपरिवार | दीसतिखेदअम्हारीस्वामिनी ऊशाली नइंवांकउइ देवइंअउं कीधउं | शालइतिखेदेअ हेऊलदेवीउ

चाविलपतिसखीप्रमुखासकलोपिपरिकरः। यद्याहोश्किंचत्केवलंगर्भदेवेनाममस्वामिन्याः। शुशऊलदेव्यो

उमेकिंहुगई ऊउ | जेउदरमांनघईरहीऊउ | करावइबइ | ऊलनीहोइस्त्रीमांनणांईणांमंत्रतंत्रशांतिकपौष्टि

यूयंकगताः। यदुदरेनास्तिष्टइत्यादि। तद्यात्रकारयंति। ऊलइद्यात्रयात्रितमंत्रतंत्रशांतिकपौष्टिका

कप्र मुख | उत्तम कार्यप्रजा प्रमुख | निमित्तियानइंनिमित्तिज्ञान एलइइबइ | नाटक निषेधांबइ | गादइशब्दइंवचन बोलिवांनिषेधां | राजा पुण

दीनांशिष्टकार्याणांशिष्टइतिचनिमित्तज्ञाने। निषेधयंतिनाटकादीनां। निराऊवंतिगादशब्दानपिक्वचना निराजा

लोकमदितशोकाऊलमयउ | हिवइस्युंकरीसइंमूढसूना | राजसवनमघलउंपसूनां | मतिषोधय | शोफनीराजधनीनेहवीऊइ तेहवुंभवनघइउं | श्रीइं मूप

पिजइसलोकःसशोकः। किंकर्तव्यतामूढामंत्रिणः। राजसवनमपिसकलंशून्यमिवाकिंपशनधनमिवा श्रि

द्वाइंबोलुउऊइऊइजेदूकउं | दुखनानंदारमतिघणुंराजन वन घइउं | उदवेगनउआगरजे हदउऊइतेहवउं | सघलादुखनउसंयोगऊ | त्रिभुवनदिवाणा वस्त्रपात्रमोहो माहिशालांपमेलाय मुइबउ लेव

यात्पक्तमिवादुःखस्यसांकागारमिवा उद्वेगस्याकरमिवासर्वदुःखानामेकरइवा विस्मृतसोनानादनसंता

उंदेवउंतेप्रमुखमनहरवीस रोगयउं | सहूयुं करिवा | लागीतिहांनीउमरमरुधइ | ओछुइंकरीमुखधोवइराइ | शूनइचित्तिइंबइसिवुंकरीशरीरनीलिंतेपूर्वत्त

षणशय्यादिभवसारमिवा किंच। तत्रनिःश्वासेरोदनंदानं। अश्रुपातेरेवसुखभवनं। शून्यचित्तोपदेशनेरेव

इठइ | ततेदवउंदुःखनउसमाचार श्रीमहावीर अवधिज्ञानेइंजालीनइंचीतयइबइ | कहउनाईस्युंकरउनइं केहनइंकहुउं | मोहनीसंदेरागनीगति एहवीदीसइछइ | दुविधउ नइगुणक

शरीरस्थितिरित्यादि। तंचतथाऽत्यंतिकरमावधिनाऽवधार्यकिंस्वर्गःकस्यवाभूमौ। मोहस्यगतिरीदृशी। दुष्टधर्मतो

रोइतिवारइंदो घरांइ | नीपजइतेदुविधज्ञानीप दिइ अम्हतउगुणदोषनु | दर्घनणीकीधउएशरीरसंको चरूप गुण | मातानइंखेददुख नणीऊउ | नोलीयरनापाणीमांदिधा ल्यउं केहरजिम | अवगुणकारीहोइ तिसमाहरउगुलमा नइअवगुलकारीकउ

विवास्माकं। दोषनिष्पन्नयेगुणेन प्रमादायस्तोष्यामी। दयंखेदायमातरि। नालिकेरात्समिन्यस्तो कर्पूरइवमेगुणः॥

इमविचारीन इ | त्रिभुवनगुरुश्रीमहावीरकांईपकरुयुं हा | तदनंतरंपीतानागर्जनइंऊशालांमंदानंदंकरी अमंद घणउआनंदजिमऊइतिमत्रिशलाचोतुवती | मालसमनइं ऊशालेसमछइ | मालागर्ज नइंऊशाले

इतिसंचिंत्यात्रिभुवनगुरुणावीरेणकिंचित्स्मयंदितं। ततःस्वर्गर्जऊशालामंदानंदंदधौत्रिशलाकल्याणमेग

योग-२

सम्पा। लगिधुमयाऽज्ञयानुचिंतेतो। किंवाकल्पितैर्विकल्पितैः। संतिममलाग्र्यानि। धन्याहं। पुण्याहं। त्रिभुवनमान्या

राधितः। श्रीजिनधर्मः। एकदाभिप्राचीनसमचीनकर्मा। प्राप्तमयाद्यमुक्तरपिरूरामः। उत्पन्नसितरोमांचकंचु

कः। प्रोल्लसितेनयने। प्रफुल्लवदनारविंदाविकसितेकपोलफलके। प्रवृत्तास्रवृषस्त्रीणांजयजीवनंदेत्यादिघः

प्रवर्तितानि। ऊललललनासिंधवलानि। संस्थापितानि। सर्वत्राष्टौमंगलानि। प्रदत्ताः ऊर्ध्वमंडटाः। उल्लसिताःप

ताकापटाः। संन्यस्तामौक्तिकस्वस्तिकाः। निवर्तिताः प्रवालनंदावर्ताः। विकीर्णः पंचवर्णपुष्पप्रकरः। वामयति

सर्वोपि। कर्पूरागरुचंदनादिपरिमलादिनिकरः। निबद्धानितोरणानि। परिष्कृतान्याभरणानि। प्रणीतानिगीतानि

नाटितानिदिव्यनाटिकानि। स्तुतिनिवादनायवादित्राणि। प्रगुणितानिसधवस्त्रीनिरुतपत्राणि। पवनेनबंदि

छात्राणि। नृत्यतिनानापात्राणि। हर्ष्यतेप्रमोदेनगात्राणि। राजस्वनंचजनोमंकीमंचचरिरिंवुमैः। हर्षंवधोपना

गेतसुवर्णकोटिभिः। आकीर्णमंचप्रमदाऊलचेटिभिः। संनिरुद्धसर्वपथंदिव्यदिव्यैः। कुर्मःउरंगमैः। कुःप्रवेशो

पत्तिनिवेशोः। मूर्तिमत्प्रमोदयमिवा। समाप्तमवोत्सुक्यमिवा। करकलितमकलसिद्धिकमिवा। लक्षत्रिभुवनमाह्

लोकनइंकोलाहलइंकरीकांनेपडुउशब्दमंनलइं | गमिरमंदु | श्रीजिनप्रासादनइंविष | मघलइबारदमूंकावें
नही | वी | इसजा

नश्रूयतेलोकानांकोलाहलेनर्कर्मपतितमपि। प्रयोजिताःश्रीजिनप्रासादेषुघ्रजाः।विरचितानिबंदिमोचना

मघलइअमारिनउपडहव | नलामाधुनासेवानक्रिविरोषघीकरे | माहम्मीवछलूकरिवांमोडो | करि
जाव्यउ | वांमोडी | वा

नि।प्रकटितःसर्वतोऽमारिपटहाविस्तारितासुसाधुजनचर्युपासिताः।श्रोत्रर्पितानिसाधर्मिकवात्सल्यानि।व्यक्ती

मोडअमेघनीनक्रि | मचूकारनइविषइमहादानअ | याचकलोकनइमनवंछितथकीअधिकादानदेवांमोडो | मरु
वा | रीतनदेवांमोडो | दानेई

कृताश्रीसंघस्तक्रिः।सत्रितानिसत्रेषुमहादानानि।सेपादितानि।याचकलोकानांमनोरघातिगानिदानानि।सेव

करीराजपुरुषकल्पवृक्षमानघया | मरुवज्रराईइकरिसिद्धार्थराजा | सर्वलोकदेवलोकसरिषउदी | झाकोनलोर
ईइसमान दीसइछइ | सइछइ | वस्त्रआनर

नाःकल्पवृक्षाइवराजपुरुषामहादानेना सुरेंद्रइवराजापरमैश्वर्येणा सौसुरलोकइवसर्वलोकः।प्रवृत्तदिव्या

णपुष्टिवइकरीघरिर | मरुउछवघ | मरुनइमनेअतिहर्ष | आरुयारुयंदारगंपेयायत्ति।मो | भगवंतनाजन्मम
नरविषइ | या | उपना | मातानीरागईपुत्रनीरागजाणेउ | नइअवसरअजी

नराणादिवसत्यागदेशमहानुसवः।संपन्नः। सर्वेषांपरमानंदश्च। आरुयारुयंदारगंप्रेयायत्ति। अचेतनाऽपि

वदिशा | हर्षपाम्पानीपरिइ | वायरापुणसुखकारिया | रूलूआरतिवारिवा | त्रिभुवनमांहिउद्योतअ | आकाशिइदेवडंडानि
पुण | प्रसन्तनिर्मलीघइ | १ | वालोगा | जूआलउघइउ | वागी

दिशः। प्रमोदमुदिताइवा। वायवोपिसुखस्पर्शामंदंववुस्तदा।१ उद्योतस्त्रिजगत्स्यापि। दृष्ट्वनदिविडंडसिः

नारकीपुण्यथिणएकइ | स्वमिपुणउल्लसी | २ | दिशाकुमारी | अक्षेलो | वासिनीनाआसनकंपा | अवधिज्ञानिइंभगवंत | अ
धपाम्पा | | | क | अनंतर | नउजेनम ज्ञाणीनइ

।नारकाअप्यमोदंत।स्मरप्युत्स्वासमासदत्।२ कुमार्योऽष्टाधेलोका।वासिन्यःकंपितासनाः।अर्हत्जन्मावधिज्ञात्वा।स्पे

वीजनमनाघरिनइ | नामप्रगटहइ | सोगवती२ | सुभोगा | सोगमालिनीध | तोयधरा | विचित्रा | वली | पुष्पमाला७
विघइंएआवइअ | नुकूलिइ | ३ | | | ४ | ५ | ६ | | |

युस्तत्स्तुतिवंदनो।३ सोगंकरा१ सोगवती२ सुसोगा३ सोगमालिनीध तोयधरा५ विचित्रा६ च्चा पुष्पमाला७।

वनिंदना८ ध | नगवंतनइनगवंत | ईशानकूलिइसूआवडिन | मंदरकनामावायरइकरी | घरधीमांडे | चारिगाऊ | ५ मेघंक
नामातानइप्रणामकरी | उपरिकरइ | रूमिकासुहकरइ | लगी

वनिंदनाऽ॥ध नत्वाप्रभुनंदबांचे।स्नानेस्तिगरुव्यधुः। सेवर्तिनाऽशोधयन्क्षमा।मायोजनमितागरुतान्॥५ मेघंक

रा१ मेघवती२ सुमेघा३ मेघमालिनीध सुवत्सा५ वत्समित्रा६ वारिषेणा७ बलाहिकाट | ६ | अरुणप्रभवदिशा | ऊर्ध्वदिशा
| | | | | | | | | एआवइनाम | | ऊमारी | उहलोक

रा।१मेघवती२सुमेघा३ मेघमालिनीध सुवत्सा।५।वत्समित्राइच्च।वारिषेणा७बलाहिकाट।६।अरुणप्रभवदिशा

धीआवी | एहआवइ | भगवंतनइस्नान | तिहांगंधोदकनी | सुगंध | वृष्टिहर्षइंकरइ | ७ | अघनंदो | उत्तरानंदे | आनंदा | नंदिवर्द्धना | विजया५
नइ | वतनीमातानइप्रणामकरी | फूलनी | | | | | | | |

त्यैता।नत्वाऽर्हतंसमाहृताः।तत्राधोंबुपुष्पौघ।वर्षंदधतिनिरा।७ अघनंदो१ तरानंदे२ आनंदा३ नंदिवर्द्धनाध विजया५

वैजयंती६ | जयंती | वली अपरा | एहआवदिशाऊमारी | पूर्वदिशी | आगलिआरीसाधरीर | समाहारा१ सुप्र
वली | ७ | जिताट एआ | | नाऊंचिकधीसावनइजोइवाका | जि | | इइ

वैजयंतीइच्च।जयंती७ चापराजिता॥८॥ताः सर्वऊर्ध्वकादेत्यालोका।र्घंदर्प्पणमयतोधरंति॥समाहारा१सुप्र

दत्ता २ सुप्रबद्धा ३ यशोधरा ४ लक्ष्मीवती ५ शेषवती ६ चित्रगुप्ता ७ वसुंधरा ८ एए अष्टौ दिशाकुमारी। दक्षिण दिशिना रुचक द्वीपकी प्रावीनइ नंदीश्वर मोटा मारी

दत्ता। २ सुप्रबद्धा ३ यशोधरा ४ लक्ष्मीवती ५ शेषवती ६ चित्रगुप्ता ७ वसुंधरा ८॥ एए एता दक्षिणरुचकादेत्य तीर्थकरान् करि हाथि एहीनइ स्नान नंदीश्वर ननश्वर इला देवी १ सुरादेवी २ पृथ्वी ३ पद्मावती ४ एकनामा ५ नवमिका नइ ७ गीत गान करइ छिइ गीत गान करइ ६

स्नानार्घं करे रुचा गीत गानं रजंति। इलादेवी १ सुरादेवी २ पृथिवी ३ पद्मवत्य ४ विएकनामा ५ नवमिका ६ रूप्य ७ इति ८ एए पश्चिम रुचकद्वीपकी प्रावीनइ वायव्यइ कोणि अणलिवीजणां धरी रहइ अलंबुदा १ मितकेशी २ पुंडरीका ३ वारुणी ४ हासा ५ सर्वप्रभा ६ श्री ७ ह्री ८ आठ उत्तरना रुचकरुप ९ एहउत्तर रुचकद्वीपदिशाकुमारी प्रावीनइ चामर विविध वर्तधी ढालइ रूपी ४ हासा ५ सर्वप्रभा ६ श्री ७ ह्री ८ रुचकादित्ता॥ १ एता उत्तररुचकादेत्य चामरणि ढालयंति॥ चित्रा १ चित्रकनका २ सतेरा ३ सौदामिनी ४ तथा एए च्यारि दिशाकुमारी दीवी धरी रहइ पुणविदि १२ मध्यमरुचक द्वीपद्वी आ चित्रकनका २ सतेरा ३ सौदामिनी ४ तथा। दीपहस्ता विदिक्षु रूपा रूपांशु विदिग् रुचकादित्ता॥ २ रुचकाद्वीपतोऽस्येयुम्

वइ एए च्यारि दिशाकुमारी रूपा १ रूपासिका २ वली सुरूपा ३ रूपकावती ४ कली १३ नालवरजानइ उपलुं नंडार ३ डाट ३ जिनन उच्चारि अंगुल छेदानइ भूमि षणी मइ एहनो नाम

तथो दिकुमारिकाः। रूपा १ रूपासिका २ चाप्यि सुरूपा ३ रूपकावती ४॥ ३ चउरंगुलतो नालं छित्वा रत्नो तोदरेऽहि

तेषां च वैडूर्यरतनइ झरीनइ तेऊपरि षीण उच्च टलउ करइ १४ तेऊपरि दोबावइ जनमना घरधी आगलि त्रिलिकेलीरु रो करइ तेदिसि कुमारी एकएकई बीजउं केलीरुं दक्षिणइ

१५ तनू। तमाहुर्यत वैडूर्यो। रत्नमयो द्वीपो वमादधुः॥ १४ बद्धा तद्वर्या जन्म। गेरुइं ताग्र रुत्रयो। ताः सर्वस्मो दक्षिणस्यो।

बीजउं केलीरुं उच्च रइ करइ १५ दक्षिण दिशिनइ केलीरुं इमा तानइ लेईनइ मातानइ जिननइ चोप उण करइ स्नानचर्चा करावइ वस्त्र प हिरावइ आभरण पहिरावइ रइ

उत्तरस्यो व्यंधुस्तनः॥ १५ याम्यरुचाग्रदेनीवाः। स्वगंतेनु सुता रुयोः। स्नानचर्यांशुकालंकां। रादिसर्वं गृहेनताः।

१६ उत्तरदिशिनइ केलीरुइ अरणीना काष्ठ मयउं चंदनवउइ अगनिपाडी नइ उपजावीनइ होमकरीनइ ते दिशिऊ मारी बांधइ रक्षापोटलीजिननइ जिन नामा तानइ १७ पर्वतसमान बाहरउं आऊ

१६। अरोरणिकाष्ठाभ्यां मुत्पाद्याग्निं सुचंदनैः। होमं रुचाबबंधुस्ता। रक्षापोटलिकांघ्र्योः॥ १७ पर्वतायुर्त

घउं होजो पाषाणना गोलानमिइ कोडिनइ जन्मनइ स्नानकइ जिननइ आपणी दिशिइ रहे दिशिऊ १७ एहदिशि प्रत्येकइ च्यारि च्यारि क्रम कुंडी नई कहइ कुंडउच्चीतवम्यइ तेहनइ जिननी मातानइ मूंसे कीतु मरी गीत गाइ इमकरी म्यइ कुमरी सरखा मामानि

वेयुक्तो। स्फालयन्ति नभोगतको। जन्मस्थानचतो नाद्यो। स्वस्वदिक्षु स्थिता जगुः॥ १८ एताश्च। प्रत्येकं च सामानिक

क देवताइ संयुक्त छइ प्रत्येक प्रत्येक च्यारिच्या हि महत्तरा देवीइ संयुक्त छइ १९ आत्मरक्षक सोलसरखइ करी संयुक्त छइ तथा मात कटक इमा

। चत्वारिंशद्धता न्विताः। महत्तरास्तिः प्रत्येकं। तथा चत्वारि सप्तति र्युताः॥ १९ आरक्षकैः षोडशभिः। सहस्रैः। सप्तभिस्तथा

तकटकनइ धणीइ संयुक्त छइ अनेराइ महर्द्धिक देवता इं संयुक्त छइ २० अभियोगिक देवतानां कीक्ष योजन प्रमाण विमानि इं वइसीनइ इहा आवइ

च्चाऽनीकैः सप्तभिश्चोक्ता। सुरैश्चात्रैर्महर्द्धिभिः॥ २० आभियोगिकदेवकृतैर्योजनप्रमाणैर्विमानैरत्रायंतीति॥ इति

MEMORIAL

पद्म एह दिशाऊमरी नउकीधउज नमनउ उद्धव वलीवउ | तदनंतर शक्रेंद्र नउं सिंहासन | चल्यउं अचल नीपरिइं निश्चल तेचल्यउं | अवधि ज्ञान देईनइं | श्रीमहावीरनउज नमजाणएउ ज्यम

पद्मदिक्कुमारिकामरोसवोंततः सिंहासनंचक्रुः चचालोचलनिश्चलं। प्रयुज्यावधिज्ञान्या। जन्मोतिमजिने

जाणीन इ २१ इंद्रमहाराजाएकयोजननी घंटा। हरिणेगमेषीदेव मुघोषानामिइं | वज्रावतउ रुउ। तदनंत र घंटानाशद्द | सयलाविमाननी घंटा नइंविषइविस्तस्या | २२ तद नंत

शिवाः॥२१ वज्रोकयोजनांघंटा।सुघोषानैगमेषिणा।अवादयन्ततोघंटा।रेणुःसर्वविमानगाः॥२२ शक्रो

रतेहरिणेगमेषीदेवतो देवतानणी जणावतउ रु तेणइं आदेशइंदरथ्या जन्मोभवनइं विषइचा लिवानउ उद्यमकरता रुआ २३ पालकनामादेवतानउंकी धजं

देवोगीततःसाद्यैः।सुरेंद्रोज्ञापयत्स्वयं। तेनप्रमुदितास्त्वा।श्चलनोपमंव्यधुः॥२३ पालकाख्यामरुत्तो।स्मिन्

लाषयोजननउंलांबउं विऊलउं। पालकनामाविमानप्रति इं इंद्रमहाराजा चडीबइस तुउरुउ २४ आगलिइरवदिशिइंसा मी आउ अग्रमहिषीबइ ठवतापरिवा रइ ४००० बइसइ दक्षि णइ

लक्षयोजनविस्तृतं। विमानंपालकंनामाऽध्यारोत्त्रिदशेश्वरः॥ २४ पुरतोऽयमस्त्रिंशो।वामेसामानिकासुराः।द

जिमणइपासइत्रिंशि सात कटक इंगिइं बइसइ २५ अनेराइघणादेवताइ परिवरयु | भीतमनइंबइ ठउ ढतउ | गुणगाइतांढतांइंद्रचा ल्या | तदन नरंअ

क्षिणेत्रिंशत्तादेवोः। सभानीकानिसप्तधा॥२५ अन्यैरपिघनैर्देवैर्वृतःसिंहासनस्थितः।गीयमानोगुणैश्चाली।दप्पे

नेराइघणादे वतांचाल्या २६ केतलाइकदेवताइंद्रनी आज्ञाघकीचाल्या केतलाइकदेवतासिंचनइंप्रेम इं बाधनचाल्या केतलाइकदेवतास्त्रीनादे वीनाप्रेम्याचाल्या केतलाइकदेवताआप णइभावइंचाल्या | २७ ॥१९॥

णमरास्ततः॥२६ देवेंद्रशासनाकेचि।केचिन्मित्रानुवर्तनात्।पत्नीस्नेःप्रेरिताःकेचि।केचिदात्मीयसावतः॥२७

केतलाइकदेवतादंडउ लनावाह्याचाल्या केतलाइकदेवताआश्चर्य इंकेईनजिरईकरी चाल्या इमघलादेवता चाल्या नानाप्रकारनांवाहनइं बइगढतां २८ नानाप्रकारनांवाजित्रन ईनिर्घोषइकरी

केचिकौतुकतःकेपिविस्मयाकेपिसक्रितः।चेलुरेवंसुराःसर्वेविविधैर्वाहनैर्युताः॥२८ विविधेस्तुर्यनिर्घोषैः

घंटानइंशब्दइंकरी देवतानइंकोलाहल इंकरी शब्दहैतमहाकोला हल घडउ २९ मीहनउबइसिनारउ घोडा बइसिनादेखनइकहइ आपणउत्वरीवेगलउ करि

।घंटानादकृतैरतिकोलाहलैनदेवानां। शब्दहितंतदाजिनेंद्रजन्मनि॥२९ सिंहस्तोवक्रिकृसिष्ठो। हरंस्त्रीयंगजंऊरु।

अन्यघाजउत्वरीवेगल माहरउकेसरीग्रहउइं ३० नरमानाबइसनारउघोडा नाबइसनारनइंकहइ गरुडनउबइसनारउमयूरनाउ बइसनारउबोक डानाबइसनारानइंकहइ

दर्नाप्यत्यन्यघातनं। ऽहंरामकेशरीव॥३० वाजिस्तोकासरारूढो। गुरुडस्तोहिसर्पगो। नागस्तोचित्रकस्तोघ।

इमसादीमादिदेवता कहइंइंद्रनारोवाहनवेगलाक ३१ देवतानीकोडानकोडिइंकी घणइविमानइंघणइ वाहनइंकरी विस्तीर्णमोटउ आकाशमार्ग तेअतिसांक

वदंत्येवंतदादरात॥३१ सुराणांकोटिकोटीभि। र्विमानैर्वादनैर्घनैः।विस्तीर्णेऽपिनभोमार्गेऽतिसंकीर्णे

डउलउति वारइ ३२ केतलोइकआपणसंग डाहुपणपणइकरीआ गालिजाताकूआ भाईविणएकमुहनइंइंद्र पडघउ अनेराइदेवतामाहेमाहिकह ताकूआ ३३

स्तवस्तदा॥३२ मित्रकेपिपरित्यज्य।रक्षचेनाग्रतोययुः। प्रतीक्ष्यक्षणंज्ञाता।स्तेमीमंत्येत्यपरेऽवदन्॥३३

केतलाइकदेवताइमकहइ अहोदेवताउं डाकूइ पर्वनादिनिसंकीर्णमोक माहोमांहिनाडानाडकइ तिलिविटप्पउमांमहमो ३४ आकाशइआवताजे. नकरउ देवतातेहनाइंमस्तकइ

क्वचिद्दंतिनोदेवा।संकीर्णेपर्ववासरे।सर्वत्रैवविधेन्नृनं।तस्मान्मौनंविधेस्तोनिस्तस्मागच्छतांयथा॥

लागाऊचंइमानाकिरणते | धउलाइमाघइदीसवइक | जरासहितगरढादी | ३५ मल्लीकनइविघइतारा घ | गलइतारा हारमरि
णइंकीजरारहितदेवता | री जससहितगरढादीसवा | सवा लागा | डामरिषादीसइढइ | षादीसइढइ

शीर्षचंद्रकरैःस्थितैः। श्रोत्रंतेनिर्झरास्तत्रामजराइवनिर्जरैः॥३५मस्तकेघटिकाकारा। कंठेग्रैवेयकोपमाः।
तारामरीरइंघसेवाना | देवतानइशरीरइंता | ३६ नंदीश्वरद्वीपनइविषइ | संघेपीनाकुंडकरीइंइइसं | जिननइंजिननां
बिंडआममानदीसइकरा | श्रोत्रताकुआ | विमान | आवइ | मांतानइं

स्थडबिंडसमादेहासुराणांतारकाबलुः॥३६नंदीश्वरेविमानानि। संक्षिप्यागासुराधिपः। जिनेंद्रंचजिनो
त्रिप्रदक्षिणांघइ ३७ | वांदीनमस्कारकरीनू | मातानइ इइइमकुइ | उंएनइनमस्कारहुउलेर | स्वविश्वजग
तेउ हुउ | नउकहि धूरक | त्रनो

वांचात्रिःप्रदक्षिणांप्रस्तुतः॥३७ वंदित्वानमस्कृत्यचैत्यंदेवेश्वरोवरैः। नमोस्तुतेरत्नकुक्षि। धारिकेवि
दीवी ३८ | हुउंशक्रदेवेंइबउं | पहिलादेवलोकधीइसं | स्वामिजिनउवीसमा | जनमनउउबव करि ३९ देखि
आवइ उबउं | तीर्थंकर इवतेहनउ | स्पउं | गालो

वलीएके॥३८अहंशक्रोस्मिदेवेंद्रः। कल्पादाद्यादिदागमं। प्रत्तारंतमदेवस्य। करिष्येजन्मोछवं॥३९ते
दवीतिलिजइबीद | इमकहीनइमातानइअवस्था | जिननउंप्रतिबिंबनगवंत | जिननइंमोनगवंत | मूंकीनइ ४० नगवंततीर्थंकरनइं
पिनीनिद्राद्यइ | नउंस्वरूपनउंरूपकरीनइं | नामातानइपासइ

तमदेवितन्नेवे। त्युक्त्वाऽवधीएनांदद्रो। रूपंजिनप्रतिबिंबं। जिनोबासनिधेस्यक्तं॥४०नगवंतंतीर्थंक
करिमंपुटमांलिलेईनइं | पांचरूपकरइ | सर्वलाननउअधीइंइपो | ४१ इंद्रकरइकुंइममानउंसरसअंविमा
तइ | हरी आज्ञमफली

रं। गृहीत्वाकरसंपुटे। विचक्रेपंचधारूपं। सर्वश्रेयोऽर्थिकःक्षये॥४१मेरोचरुकुमरुममअद्रलसंग २७

त्रिलिकारलिसघलाशरीरनीतेज श्रीनइसंकेतनउंगामएहवउंतारर | अनंतावलीहूर्लिमानाचंइमाकिरणनीपरिइंअतिसाम
उंरूपआषेइकरी देषउ छउ | उंजलापहवासुस उम्दारागुण

तेत्रास्मिरी संकेआवमरुसत्तावपुरुष्यंरूवंनिरुवेमि | ति। निस्मीमंपुणपद्मणिंइकेणुकिरालिरामंगु
ना | समरुग्रतिइंस्तविवावोछतउक्रीतउस्तवीसकउंजउमुखि ४२ | इंइइएकरूपइंढाघइंती | इंइबिऊंपामाबिऊंरूपइं | इंइएक
इंसरुस्यूजीन ऊइ | धैकारग्रस्ता धस्या | चामर धरइ | रूपइंम

ण ग्रामंघोउमणेमहानिस्तयवंजीदासरुस्समुद्रो॥४२एकोगृहीततीर्घ्रो। पार्श्वद्वोचात्तचामरो। एकोगृ
स्तकइंछत्रधर | एकरूपइंआगलिचाल ४३ | आणस्युउरूपआछिलो | ग्रहिल्यउंरूपआगलो | नेउपाछोवलीनइंजोव | केतलाइ
इ | उज्जालइ | रूपनइस्तवइवषाणइ | रूपनइस्तवइउनलउ | इछइ | कआगलीलि

हीतातपत्रं। एकोवज्रधरःपुनः॥४३ अग्रगःषट्गंस्तोति। षट्षट्स्तोप्यग्रगंपुनः। नेत्रेपश्चात्ममीहंतो। कचना
नोजाणइतानइं ४४ | शक्रेंइमेरुपर्वतनाशि | पंडकवननइंविषइ | मेरुनीचूलिकु घीदहि | अतिपोढुकंबलाशिलाऊ ४५
देवता | खरना | जईनइ | लोहितुंइ | परिमीढासननइंविषइ

ग्रतनाःसुराःधध शक्रःसुमेरुशृंगस्थे। गत्राघपंडकंवने। मेरुचूलिंदक्षिणेना। तिपांडुकंबलासने॥४५
जिननइंघोलइलेईनइं | शरीरमांस्नउ इंइबस्मइ | बीजासमस्तइंइ | नगवंतनइंसमीपिइंमे | ४६ सोनाना | रूपाना
सर्वहि | रुपीखरइंपाधरा आवइ | कलशा १ | कलशा २

इत्योमंगेजिनंस्तवी। निमुखोमौनिषदंति। ममस्वामिपादामेयरुः॥४६सोवस्मो। राजता।
रतनना | सोनानोरूपानाकल | सोनारतननाकलशा५ | रूपारतनना कलशाइ वली | ४७ | सोनारूपारतनना | व
कलशा३ | शाध | कलशा७

राज्ञा। घृतैर्क्षीरूप्यमया। अपिस्वर्णरत्नमया। स्वानिरूप्यरत्नमया। अप्पि॥४७स्वर्णरूप्यरत्नामया॥अ

लीमादीनाकलशा८ वली एकेकीजातिनाकलशापकसहस्रनइंआवकरइ। ४८ इमलंगार। आरीसा। रत्ननाकरं सरावसंपुट-
योजननामुखछइजिइ रीया
पिधृत्सामया।८ अपि ऊना: प्रत्येकमष्टोत्तरशतंयोजनानना:। ४९ एवंचंगारदर्पणरत्नकरंडकसुप्रतिष्ठक
थाल- पात्री कलनीचंगेरीप्रमुखंयज्ञानोउपगरण। कलशानीपरिइसीनारूपादिक
आवजातिनांऊइप्रत्येकएकसहस्रमनइआवइ तघामागधादिकतीर्थनी
स्थालपात्रिकाचुष्पचंगेरिकादिइज्योपकरणादिऊनवदष्टप्रकारालिप्रत्येक मानानि।तघामागधादितीर्घानां
माटीपाणीअ गंगादिकन पद्मकेसरीप्रमुखद्रहनोकमलपा चुल्लहिमवंतादिकवर्षधरपर्वतनांचेताद्यपर्वतनां। देवऊरु
णावइ दीनी ली आणवइ इइ विजयनोवक्षारागिरिनो
मृदंजलंचागंगादीनांपद्मकरादीनांपद्मानिऊलंचाचुल्लहिमवद्वर्षधरवैताद्यविजयवक्षस्कारदेवऊरु
उत्तरकुरु नइआलवननंदनवनादिकनासरसवफूल कमाइलागंध सघलीऔषधी जलादिक। अनियोगीदेवतापादिइद्वा
रमादेवलोकनउअच्युतेइ
त्तरऊरु।त्तइआलनंदनवनादीनांमिश्रार्घपुष्पउबरगंधस्नात्रमवौषधीस्नात्रजलादिचालियोगिकसुरैरच्यु
आणावतउऊज बीरमसुइनइंपाणीइ धस्याहियाआगलि तेणइकलशाइकरी आणीइमंसारमसुइतारि घडाहियाआगलि ४९
नस्या देवता एहवा शोभनइ यानणी धस्याछइ
तेऽआनाययत्क्षीरनीरनतैर्वस्त्रस्थलस्थैसुराबनु।संसारोघंतरीउकिंधृतंऊनाश्वधुवं॥४९
संसारसमुद्रनुइपे पद्मताजगन्नाथ इणिकारणितेदेवतातेसंसारनइपेलइपा ५० सावरूपीउदृकुजा आप
लइपारि रिपडुचिवानणी कुदइधरताकुआ णीइमीचतानकुर णउ
परंसवोदधिः पारं।मात्रिनस्त्रिजगत्पतिं। इतित्त्रैवतेगीतो कलशानुरमादधुः॥५० सिंचंतेश्वसावद्युक्ति

मलजाणीइधोईकाढ कलशचडावतानऊइजा। धर्मरूपीयात्रासादनइंधि ५१ ईंनउमंदेदऊपनइ जाणीनइमहाद्वारमे
तानऊइ णीइ पइइवादेवशोभनइछइ रुपर्वत प्रतिइं
पंतोवानिजेमलं।कलशोस्त्र्यपयंतोवाधर्मचैत्येबनुःसुराः॥५१मंत्रायंत्रिदशोराम्यामचावीरोऽमराचलं।
डायाअंघगनउअंगुष्ठइ आषइमेरुकंपावंता ५२ तेमेरुकंपिवंतां पृथिवीकांपी॥ पर्वतअनेरानां
देईनइ कुआ शिखरचूटीपडी।
अंगोमोगुष्ठाग्रसंपर्क्या।समंतादप्यवीचलत्।५२कंपमानेगिरौतत्रोचकंपेघवसुधरा।शृंगालिसर्वतः
समुद्रपुणघोन्या ५२ त्रासोऽप्सेऽइपदवइशाबूईविसृतइघकइ शक्रेंद्रीसाणउ।अवधिज्ञा भगवं
इविसृतस्वकर नइजाणीनइ तेनउव
पेउ। शुक्रुलःमागराअपि।५३। ब्रह्मांडस्फोटमदृशो। सद्यद्वैतेप्रसर्पतिं। रुष्टःशक्रोऽवधेर्ज्ञात्वा।क्षमया
बललहीनइइनगवं ५४ असंख्यातातीर्घकरमांहि ऊणइंतीर्घिकरइं ऊपगइंफस्य मेरुकांपिवानइंमिसिइंआ जाणीइनाचत
तूनइंघुमावतउ उनऊतउ नंदइंकरी उनऊ
मांसंतीर्घपं॥५४ संख्यातीतार्हतांमध्ये स्पष्टःकेनापिनोक्रिणा। मेरुःकंपमिवादित्या।नेदादिवनर्तनं
इ सघलापर्वतमांहिमुख्न इ राजपदवी हुवी मनाघनाणीइंनइंअनि तिर्णिदेवता हरमरीषा भगवंतचमरेंद्रनोरूपीउजा पराज तियारइंपछि
वेकइंकरी क्रुआ लीइमेरुपर्वतनइंमुगटकुं चिलुकु लउंबासमादेव
मेः।शैलेषुराजतामेरुःसूत्रनीरातिषेकतः।तेनामिनिर्झरा धारास्त्वमीपीडोत्तिनकाधा॥५५अच्युतेंद्रस्त्व
जोकनउअ भगवंतनइंअतिषेक तदनंतरअनुक्रमिइं चंद्रमासूर्य अतिषेककर ५६ आरिश्वसनांरूपकरी शक्रेंद्र
अतेइ करइ उतरतारछेछउइ इ नईपोतइ
हास्वं।विदधत्यभिषेचनं।ततोनुपरिपाटीतो।यावद्वैरार्यमादयः॥५६चत्रवृषभरूपाणि।शक्रः

तदनंतर आवसीगइं आवकलश नाघारमसुइनइपाणीइ अभिषेक करतउ ५७ तेदेवता विबुधइंद्रा करइं तेमाचउं जेणइंदेवताइं प्रतिमाजि नभीमहावीरनइ पाणीइंस नाघ कर

रूचास्वयंततः।शृंगाष्टकरुरुरुरैरकरोदभिषेचनं।।५७सत्यंतेविबुधदेवा।येरंतिमजिनेभिउः।स्नजभिः

तइ पोतइंनिर्मलपणउं पामयउ ५८ मांगलीकनइअर्थि इंद्रीयो करीनइंछु भगवंतनइ आरती क रीनइ नाटक गीत वाजित्रप्रमु ख नाना प्रका

मलैलैःस्नात्रास्वयंनैर्मल्यमादधैः।।५८मंगलप्रदीपंतो विधयारात्रिकंप्रभोः।।सत्यगीतवाद्यादिविवि

रनाउछवकरइ ५९ हिवइंद्राकेंइनगवंत नइआणीनइ माताननपासइंमूकीनइ प्रतिबिंबनइंअवस्वापिनी निद्रा आणी शक्रिइंसं हरइपरहु करइ

धेउस्वंअधुः।।५९शक्रोघजिनमानीय।विमुच्यबोतिकेततः।मंजुरप्रतिबिंबाउवस्वापिन्योस्वशक्तितः।

६० ऊंछलयुगलनइंवस्त्रयुग लभगवंतनइ उभीमइमूकइमोधर्मइ श्रीदामरतननीमालाइसहितसोनानउंदडउचं दूआनइविषइ जंबायेमान करइ ६१ बत्रीस कोडिमो नानीरूपा

६०।ऊंछलेकोमयुग्मंचो।छीवेमुक्तावधत्परिः।श्रीदामरत्नदामाद्य।मुल्लोचेसर्वकंउकं।।६२।।विराउनरे

नीरतननी वृष्टिकरीनइइंद्र अत्यंतउदघोषणाएस्त्री करावइ आपणाआभियोगीमेघ कदेवता पादि ६३ ओंबानीमांजरिसूमिइआढेदीकउकहा उनइंकहइभगवंतंभगवंतनीमाताऊप

+नइ+२

सूएकोटिवृष्टिंविरच्यसः।बादमाघोघयामासो तिसुरेरानियोगिकैः।।६३स्वामिनःस्वामिमाउश्चाकरिष्य

रिजिकेंइनइंउ मनकरीनइ तेरनउंमस्तकआंबानीमांजरिनीपरिमेइंमउकउ कउगमेफूटिएइ भाजिएइ ६४ भगवंतनाअंगुगानइंविष इ अमृतसंचारीनइ देवतासगवंतनउजनमन उमंउछवकरीनइं नंदाश्री सरहो एनइ २२

त्यक्तुंमनः।।शातधात्रंजरीवज्रीरत्नप्रस्फुटिष्यति।।६४स्वामिंगुष्ठेमृतंप्रस्य।देवीजन्मोत्सवंविभोः।नंदी

विधइअंगलूहणउदेउछव करीनइंजिमआवा गमिचलावा ६४ इतिश्रीमहावीरनउजनमनउ उछववधाएफउ गंधकासाईअंगलूहणइ भगवंतनउंअंगलू इंद्रमहाराज

श्वरेऽष्टाहिकाचक्रुःस्वास्वंयुर्यागतो।६४इतिश्रीवीरजन्मोत्सवः।उन्मृज्यगंधकाषाय।दिव्ययागेहिरिर्विभोः

बावनाचंदनइविलेप नकरीनइ भगवंतनइंफूलिइंकरी हर्षतो हुवा ६५ आरीस मरावमंपुट२ ऊंन३ भस्मयुगम४ श्रीवस्त५ माघा

।विलिप्यचंदनाद्यैश्चापुष्पाद्यैस्तमसृजयन्।।६५दर्पणो।वर्धमानश्च।कलशो।मीनयोर्युगं।श्रीवत्स।स्वस्ति

उ नंदावर्त्त७ भद्रासन८ ६६ इमशक्रेंइमोधमैंइस्वामीआ गलिरतन ईचाउलिइं नइंपाटलइंछत्रोपान आमांगलीकआलेखी नई पद्मसुतिक

को।नंद्यावर्त्त।भद्रासनेइति।।६६शक्रःस्वामिपुरोस्तनः।पद्मकेरूप्यतंडुलैः।आलिख्यमंगलान्यष्टा।वितिस्रोऽधुं

रिवालागउ ६७ सोनइंआएककोडि अनइं सूरोआगलाअ पतलउंदानदाघे प्रभउं दिनिप्रतिइभगवंत सूर्यऊगपाछीमांडी नई ६८ पऊणपोरसिमांहि ६८

प्रवक्रमे।।६७पंगारिरत्नकोडी।अष्टवअणेणगामयमस्मा।सूरोदयमाइओ।दिक्खज्जापायरामाउ।६८

त्रिलिकोडिसोनईआअ नइवली अश्वामीकोडिसोनईया अमीलाअपतलउंभगवं तइंवरप्रभदिनमांहि दीक्षउ ६९ दीप्तालीक्षबी बारवरसलगमांमं

तिन्नेवयकोडीसया।अग्गमीइंचऊंतिकोडीउ।अमीइंचसयसहस्सा।पअंसेवच्छरेदिन्नं।।६९तेरसमम्मसं

लगीएतला तपकीक्ष नवचउमासीतपभगवंत इं कीक्ष छिमासीतपब कीक्ष बारमासखमणकीक्ष ७० बज्जऋषभखखमण कीक्ष

वच्छरस्सानक्खंकरचाउम्मासे।छक्किरोमासिपउवासी।आबारसयमासिआइं।७०बावन्नरिअहमासाअ

७१ | घरउएकछमासी त पकीधउ | बेत्रिमासी तपकीधउ | बेअढीमास खमण कीधउ | बेदिउढमास खमण कीधउ ७२ | नउप्रतिमा१ म हानउप्रतिमा २

७१एकंकिरछम्मासं। दोकिरतेमासिएउवासी॥आ॥ हाइऊइंउवे। दोचेवदिवड्ढमासाइं॥७२॥इहंचमहन्तरं

तथा सर्वतोभद्रप्रतिमा ३ | नउइंबेउपवासमा हानउइंधउउपवास | सर्वतोभद्रइं१०उपवासा ए हलागट करीप्रतिमा २ ७३ | निरुजनउप्रतिमाइं।चिऊंदिशि इं | च्यारिच्या रिशुद्धर

पडिमंतन्नोअसक्कउसद्दं। दोचत्तारिदसेवय।दिवसेउवासीअणुवहं॥७३॥तत्तनउप्रत्येकं चउद्दिऊं।प्रस्रकायो

काउस्स ग्गकरइ | छठ्ठइंश्रीघाइ १नउप्रतिमा | महानउप्रतिमाइंचिऊं दिशिइं | एकएकदिनकाउस्सग्गकरइचिऊं उपवासइं श्रीघाइ | सर्वतोभद्रप्रतिमादशइदि शिनइविषइ | एकएकदिन काउस्सग्गकर

स्सगात्पइएनसमाप्यते।तदानउप्रचउद्दिऊं।प्रस्रकायोसर्योदशमेना सर्वतोभद्रोउदशदिऊं।प्रस्रकायो

इबावीसमेनत्तिइंदशउपवा सइं श्रीघाइ॥ | ऊंचीनीचीदिशिइंकाउस्सग्गकिमकरइ। इणऊंचीनीचीदिशिनां | काउस्सग्गकिमकरइतिमऊधा इव चिंतवइ | एकप्रतिमानगवंतइंसंलग्नलगती निरंतरलागट करता कउस्सा

स्सर्योद्वाविंशतिसाक्तन्। ऊर्ध्वमेदिशोःकायोसर्गस्तद्विगातद्व्यचिंतनेनज्ञेयः॥एतत्प्रतिमात्रयमेलग्नमेवाकाश

गोचरीनइअनिश्रइकरी संयुक्त | छमासीतपकरता कउस्सा | पोचेदिनेऊणउ | नगवंतमावधमनघकाको ७४ शांबीनगरीइ

धरेतु॥गोयरमनियन्नुआ।खवणीछम्मासिअंचकामेआ।पेचदिवसेहिंऊणी।अच्छिउवद्धमनयरीए॥७४

कोशांबीनगरीइशतानीकरा जारांज्यकरइ | मृगावतीनामिइं राणी | पोसवदिपडिवादिनेश्रीमहावीरइ अनियइकीधउ | द्रव्यघकीरांधो उडदनाबाकुला सूपउाकडकरइंघाल्या मेलइतउ

कोशांब्यांशतानिकोराजा।मृगावतीराज्ञी॥पोषवदिप्रतिपदिनेऽस्मिन्नुजगद्गुरुः। द्रव्यतोराइऊल्माषात्सूपकी २३

लेउं | षत्रघकउदेणहारीनउपगएकुंबरामांहिबीजउपगऊबरामेंबाहिरिऊं | कालघकउनिरुकाचरनिरुमांगी वेउल्याऊइ | नावघकोउअनियइराजऊमरीदास पणउंपामीऊइ | पगेअवीत जेउआऊइ

गएतावत्। क्षेत्रतोदेहलीबहिर्गतेकपादा।कालतोनिर्वृतेषुनिरुकाचरेषु। तावतोराजसुतादासत्वमापन्ना।निगडिता

रोतऊइ | मस्तकइंमुंडनक रुंऊइ | त्रिलिउपवासमध्याऊइएहवीवुहरा वइतउ पारणउंकरइ | धनावहमेणिनीनार्यामूलातेहनइंघरिरे हुतीइं | चंपानगरीनउधणीदधि वाहनराजातेहनीनार्यो

रुदंतीमुंडितमस्तका।अष्टमस्तक्तिकाचेद्वास्यतीतिधनावहेष्टिनार्यामूलागदत्तिस्थितया।चपेराद्धिवाल्न

झरिणीराणीतेहनीपुत्री वसुमतीइंचंदन बालाइंस्वामीमहा | वीर लान्याप्रतिलाभ्या | पांचदिव्यउद्घ वकुआ | देवताएचता कुआ | हर्षइंकरीक रुताकुआ | मस्तकइंनवावाल

नृपधारणीराज्ञीसुतयावसुमत्या।स्वामी।प्रतिलासितः।पेचदिव्यानि।देवानदुंदुः हर्षेणजगुः।केयंवीरमिमं

आव्या | अगीलफीटीझांझरघया | देवताइंचंदननीपरिइंशीतलवारीरसणीचंदनबालाना महीयउं | लोकइंकरी देवनीदृष्टिऊईतेलेतारा जानइंवारीनइं

जाताः।निगडितानिनृपराज्ञादेवैश्चंदनशीतलयाचंदनेतितस्यानामाकारि।लोकाज्ञानंवसुधारांगृण्हन

देवताकरुताकुआ | लेहनइंएचंदनबालादेसुइतेहुनीएवुनी दृष्टि | तदनंतरनेचंदनबालापोतानाविक्रीतमानधनावहमेणिनूइंदेव्य आपतीकुइ | राकेंइआ महावीरन

राज्ञानिवार्यप्राह। यस्येयंदास्यतितस्येषा।ततःसाधनावहश्रेष्ठिनंस्वपितृतुल्यमवर्ण्यया मामा।राजःश्री

इंकेवलज्ञाननी उत्पत्तिलगीराजाशतानीकनइंचंदनबालासलखीन इंनगवंत नइं नमस्कार करी | वलतउकु ज। | बारनिकुनी प्रतिमामहा मआमहावीरवइ | मुनिमहावीरएकराचि कीबारमीनिकु

वीरकेवलोत्पत्तिवधित्वाज्ञायराज्ञेज्ञापयित्वाप्रभुनत्वा।अगमत्।दमदोश्चक्रिमरुण्या।राज्ञ्युणीएगराज्ञ्ये

अट्ठमइंकरी यत्तनाइंकरी ←अट्ठमत्तेणजई←१

नीप्रतिमा | एकचरमरात्रिकीसमाणि इंकाउसग्गिरहइ | बारमोहि छेहली एकरात्रिकी प्रतिमावहता कृआ | जेप्रतिमाइंअट्ठम करइ | छेहलीरात्रिइंलूंषाएकइव्वनइंवि

पडिमाँइक्किक्कंचरमराइअं॥ घदशाएकरात्रिकीप्रतिमाअकार्षीत्यायाश्चमत्तक्रेनचरमनिशिकृक्केकइव्यदत्तइ

षइंदृष्टिइईआरिप्रहरकाउसग्ग बिसइंनइंउगणत्रीस छइ करइ नगवंत नगवंत नइं कहीइंछदमस्थपणइ निरन्नदिनि प्रतिइंआरा र अनइं चउछट्ठ

ष्टिकायोत्सर्गकरणेनक्रियते। दोत्तवय छट्ठमए। अउणत्तीसेउवासिउत्तयवं। नकयाईनिवत्तंतो चउछत्त

कउपवासनकृ ७५ माढोबारवरमनइंएकपक्कलगीनगवंतनइंजघन्यतपकृ छट्ठउ छट्ठधी उछउतपनकृ मल्लवीरनइंसघ लउतप चउविहार कृउपुणपाणी नधी धउ

शंचमेआणि॥७५ बारमवासेअदिए। छट्ठन्नंजदन्नयंआसि। मज्झंचतवोकम्मो अपाणयंआसिवीरस्स॥७६

छद्मस्थावस्थाइंनगवं तनइंत्रिन्नि मइंनइं उगणपंचासदिन एतलउपारणा नउकाल नइंबइयता कृआ ऊसारदिवा नीप्रतिमाघणास यकृआ ७७ दीषातेवा नउदि

तिन्निसएदिवसाणं। अउणापन्नेअपारणाकालो। उक्कुडुअनिसिज्जाए। विअपडिमाणेसएछक्कए॥७७ पछक्काएहि

वस घघमसोडी नइंइहां छद्मस्थपणानउकाल संकलीइएकउकरीइ जेतलउकालघयउते तेतलउसोन्नलउ ७८ बार वरस छमास एकपष वाउ

वसो। पढमंइछेउपरिहिविन्नाणे। संकलियंमिनंते। जंलद्धंतंनिसामेहि॥७८ बारसचेवयवासा। सामाछद्मेवअहसो

श्रीमन्महावीर नगवंतनइं एहछद्मस्थपणानउपर्याय एतलउकुलघयउ ७९ छद्मस्थपणानीसघलाकालमांहिनगवंतनइंप्रमादएक घालिलापंचवी समासवनइंविषइ

उ। वीरवरस्सनगवउ। पमोछमछपरिआउ॥७९॥ द्वादशवर्षाणिसंकलितःप्रमादोनर्मुक्तेर्हि॥ प्राप्तवानेवं

MEMORIAL

श्रीमहावीरनउजीव | २५ | लत्राआनगरीनइंविषइनंदननामराजा | पंचवीसलाषवर मनइं आउषइकृता | चउवीसलाषवरसगयापछी पाटिलाचार्यनइंसमी

।श्रीमन्महावीरजीवः॥२५सवेछत्राग्रपुर्यांनंदननृपः॥२५लक्षायुर्वर्षैश्चलक्षवर्षसोऽनुदीक्षोपोट्टिलाचार्यसमी

षिदीक्षीले ताकृआ तिहांलाषवरसदीक्षामांदिमासमासखमणनइंपारणउंक रउंएहवउअनियइकरता कृआ इग्यारलाष अग्यासहस्र बमयनइंपंचतालीस

पेनयाऽतत्रलक्षवर्षदीक्षायोमासक्षपणानित्यस्तत्। इक्कारसलक्खाइंअसीइसहस्साय छमयपणयाला।

मासखमण नंदन नी त्तवनइं विषइ मल्लवीरइंकीक्षाउप रांतिवलाप उपवास कीक्षा १ मासखमाण इग्यारलाष मासखमण छसइंपंचतालीस ५ लाषवरसपतलागु

मासखमणानेदाणं। त्तवेमिवीरस्सपंचदिणा॥ मासक्षपणानि१लाषष्ठसहस्रइंश्यपंदिनपंचवर्षलक्षमयइइ

णउकरइकरइतिवारइतिवारइंएतलादिन घाइं तेमांहितपदिन एहपारणाना दिनएह पतलाइंदिनइंनागदीधइकृतइंजेसंख्याक होतेतली आवइ

गुणनइइ०००० दिनानिजातानि। तेषांतपोदिनत्रयपारणादिन॥। एवं ३१ दिनैस्तीव्रदत्तेयघोक्रम्यलात्तात्

केवलज्ञानपामी नगवंतजाण ताएषतासकोविचारइ तिहांथिणएकधर्मनउउए देशदेईनइं द्वितानइंउद्योतकृआइ तिहांदेवतानीमसामांहिना ननकृउतिणिअपापामध्य मानगरीइमकृसेनव नमांहिआ

।जाणमाणेषामभाणे। तत्रादिपक्रुगंधर्मी देवोद्योतेजगकुरुः।लात्तानावान्मध्यमायां। मक्रुसेनवनेऽगम

मा१ श्रीअपापामहानगरी नइंविषइ सोमिलब्राह्मणइंयज्ञमेडा ग्यउछइ तिणिसोमिलब्राह्मणइं तेआ छता आव्या इग्यारब्रा ह्मणमांहिउत्त म वडा ब्राह्मण २ इंद्रनूतिः

त्।१ श्रीअपापामहापुर्यां। यथा ज्ञार्यां सोमिलोद्विजः। तदाकृतासमाजस्तु। रेकादशद्विजोत्तमाः॥२ इंद्रभूतिः१

अग्निभूतिः २ | वायुभूतिः ३ | व्यक्त सुधर्मी ५ | मंडितः ६ | मौर्यपुत्र ७ | अकंपितः ८ | अचलभ्राताः ९ | मेतार्य १० | प्रभा ११

अग्निभूतिः २ वायुभूतिः ३ व्यक्तः ४ सुधर्मी ५ मंडितः ६ मौर्यपुत्रः ७ अकंपितः ८ अचलभ्राताः ९ मेतार्यः १० प्रभा

ए११नां एकनइ नामइ मनउ मंदइ ला मंदइ १ | बीजानइ जीवनउ मंदइ २ | त्रीजानइ तेहज शरीरए मंदइ ३ | चोथनइ तनउ मंदइ ४ | पांचनइ जेनइ इते घोइ ५ | छठनइ बंधमोक्षनउ मंदइ ६ | सातमनइ देवनु उमंदइ ७ | आठमनइ नारकी नउ मंदइ ८ | नवमनइ पुण्यन परलोकनउ उमंदइ ९ | दशमनइ मुगतिन उमंदइ १० | अगीयारमनइ मोक्षनउ उमंदइ ११

म ११। जीवे कम्म तज्जीव ३ तय ४ तारिसय ५ बंध मुक्ख ६ अइ ७ देवो ८ नेरइ ९ आवा १० पुन्ने ११ परलो १२ निव्वाणे ११

पांचनइ पांचपांचम य ढाल जालिवा | माढा त्रिभि त्रिभि त्रिभि मय ढाल बिहुंनइ ढाल बिहुं युगल आगल्या | चिहुंनइ त्रिभि त्रिभि मय ढाल नउ मुक्तायढइ | २ | इम च उआलीस | गल + २

पंचन्हं पंचमयाणं अहुत्तमयाय हुंति तिन्नि गुणा। हुंज्जु अलयाणं। तिमउ २ हवइ गढो ॥ २ एवं चउण्ह चारिं

प्रथ ब्राह्मण मिल्या ढइ | यज्ञनां कार्य कहइ | स्वर्गनां सुख नी वांढा करताथ का | इम एह | तथा इम अनेरा इ घणा

श ढता निमिलिता द्विजाः। ऊचुः यज्ञ कर्मणि। स्वः स्वर्गी णि प्रलिप्सवः ॥ ३ एवमेवोधव ०० अन्येच बहवो

ब्राह्मण मिल्या ढइ | तेकहइ ढइ उपाध्या य | श्रीकर एहवइ नामिइं वंकर एहवइ नामिइं | धनेश्वर एम धरा जानी। गंगाधर गदाधर विद्याध रं महीधरा लक्ष्मीधरा धरणीधरा नृधरा श्रीधरा रा

द्विजा मिलिताः मंतो तद्यथा। उपाध्याया श्रीकराः शिवंकराः ईश्वरा मोदराः उमा महादेवा शिवदेवा रामदेवा मदेवा कामदेवा मद

देव नरदेव हरदेवा वासुदेव श्रीदेव श्यामा श्रीपति प्रजापति उमापति विद्यापति गणपति रूपतिमहीपति लक्ष्मीपति दिपति

गंगापति पंडिता जनार्दन गोवर्धन विष्णु कृष्ण मुकुंद गोविंदा माधव केशव पुरुषोत्तमा नरोत्तम जोगी षीमा रीता नामा रं

ता नोमा रीत धनाईत अनाईत देवाईत त्रिवाडी हरसर्मा महशर्मा नरशर्मा नागशर्मा अग्निशर्मा जयशर्मा हवशर्मा नीम

शर्मा इमशर्मा चउवे हरिहर हरिनारायणा नारायणा नीलकंठ वेदांत श्रीकंठ स्वयंभू प्रमुखा ॥ ढा ॥

ते देवता नउ ग्राह्य | मोनलीनइं ब्राह्मण तिहांथू ग्राह्य या | अहो आश्चर्य इं यज्ञ नइं करनारइं यस्यउं | तिलिकार लिदेवता ईहां आव्या | ४ | मोनलीनइं करीतउ

तं दिट्ठ देवघोसं। सोऊण माहणा तत्थ। अम्हो जन्नि एण जुत्ते। देवा किर आग आइ इयं ॥ धो ऊण कीरमाणो।

महिमा देवता इं श्रीमहावीर नउ | हिवइ बोलइ अतिमा नो | अमर्षधरी नइं इंद्रभूति श्री गौतम स्वामि | ५ | मुख नइं मूंकी नइं लोक | म्यउं जाइ ढइ एह तेम ए वार नइं समी

महिमं देवेहिं जिण वरिंदस्स। अइपइ अम्हाणं। अमरसिउ इंदभूइ त्ति ॥ ५ सुणमम लोगो। किंधवइ एसत

पिइं | अनेरउ जाणकहिवराइ मुख नइं ढइ गंढता | एहवा त किम मनवइ नेऊ इं इ | मूर्ख लोक वांचाइं ढेत राइढेई | देवता किम एण इविस्मय पमाडया सोलव्या

स्सपासूलो। अन्नो विजाणइ मए। तिअंमि कन्नुच्चियएयं ॥ ६ वच्चिऊ ण मुक्खजणो। देवाकद्दमेण विम्हयनीआ

वांदइ ढइ स्ववइ ताइ छु एवर्णव इढइ | जिलिकार लिमवंज्ञनाम वं जाणनी बुद्धिइं करी | ७ | अहो देवता उ उम्हि किमन्नां तिपाम्या जि लि मुख नइं मूंकी | केहनी परिइं जिम काग दु तीर्घ ना पाणी मूंकी थ्यनुं द्वि गार मूंकी कादविइ जाइ | जिमडेडकाकमलीनी आ माधी जिमच

।वंदंति मंघुणंति अ। जणेमन्नन बुद्धीए ॥ ७ ॥ अहो सुराः कंघ न्नांता। स्त्रीघो त्तश्च वायमो। कमलाकरवऊ का महि

दन मूंकी मल मूत्रइ नाइ | ८ | चूंट जिम नलाट कूमूंकी कंदालइ वृद्धि जाइ | जिम चूंउम सूयर धरमूंकी विष्ठाइं राचइ | जिम गूदडमस्त्र्य नउ प्रकारा मूं कीअंधरइं जाइ | तिम चम्हे देवता उ आ व्यया गमूंकी तिहांथ्यउं जाउ ढउ | ९

कांचंदनेयघा। ८ करनाश्वमहत्तान्। क्षीरान्नेश्करा श्वा अर्कम्पालोक वघूका। स्वकायागे प्रयांतिमत्। एयुग्मो

अथवा जेहवउ ते | ज्ञानी ढइ देवता इते हवो मिल्या ढइ | मरिषउ मेयोग मिल्यउ ढइ | गामनो नाटकीयानइं गामां नाजजोण हारा मूर्ख मिलइ तिम | १० | क्लीहि यइ चीत वइढइ | आका शइं

अहवा जारिसउ जिन्हो। मो नाणी तारिसा मुराते वि ॥ अणुसरिसो संयोगो। गामनडाणं व मुक्काणं ॥ १० स्वगता ॥ वो

एकगुफामांहिभीरुबेस्य उंरहइनानरहइ | एकषडगमांहिबेपडीयार ऊरनऊइज | कइसर्वज्ञऊकइतेहज कहिवाइबेस्या ११ | पुण जाणीइबइकोईएक इंद्रजालीउ

मिस्सूर्यघयंकिंस्यात्गुरुत्योकेशरिद्वयं।खऊहोवाप्रतीकारो।किंसर्वज्ञोप्यहंसचा।एकिंचिंद्जालिकःकोपि

कलावंतएरदेशीबइ | तेणइसर्वज्ञनहुंअडेब रईकरी | लोकअनइंदेवताविघटता स्याजोलग्या १२ तेगौतमबोल्या लोलोकउकेरुव उएक एसर्वज्ञबइस्य उं

।कलाशालीविदेशजः।सर्वज्ञोदोपमाचेणजनस्यग्रिंघतारकः॥१२मोवादीमोजनाःकीदृग्।सर्वज्ञोमोनिग

मरूपबइ | वलतउंलोककहइएहनउंमरूपकउणकरीस्यकइ आणइकहिउंनजाइ १३ तेगौतमचींतवतउहूउ तउएहनिश्चइ मायानउघरिबइमहामाया वीद्दीसइबइ किम

द्यंते।जनैरूचेस्वरूपं को।वक्तुंनामास्यशक्नुयात्॥१३मदध्मोतद्यमोन्हने।मायायाऊलमंदिरं।कथं

मघलउलोक | न्योतिमांहिपाडयउएणइ १४ पुणऊंघिणमात्रयमउंनहुउ तेमर्वज्ञकहिवावइतेकहीइ अंधकारनउमरइयालिवानइजिम

लोकःसमस्तोपि।विस्मेपतितोमुना॥१४नरूमेरूणमात्रेउ।तेमर्वज्ञंकदाचिनः।तमस्तोममथाकर्तुं

सूर्यनथडिघइतिमऊंपकषउंनही १५ अगनिजिमकेदनईउहा घनउफरसनथमइ जिमकेत्रीसिंघस्यापद एगादिकनासादनथमइ जिमछिंवीवरीनउंथेत्र नथमइ तिमऊंएहनहुनथ मउं १६

सूर्योनिवप्रतीरुते॥१५वैद्यानरःकरस्पर्शीमृगेंद्रःस्यापदस्यरं।स्त्रियाश्चरिपुरूचेनमरुतेकदाचन॥१६

जेणइमईवादीनाइंद्र मोटावादी | >प्राणबोल्यासाष्यसघलइ पुणकोईएकएघरसूर मवश्यपंडीउदीसइबइ मर्वज्ञऊहतउमुऊ आग लिकांइनावइ १७ जेली अगनिइंद्रा षापर्वत बा २६

मयादियेनवादीद्रा।मूलोमैस्थापिताःसमे।गेहेस्वरतरःकामो।सर्वज्ञस्तस्पुरोनवेत्॥१७बोलायेनाग्निना

बाल्या | तेअगनिआगलिदूरुनउंस्यउगजउ | जेणइवायरइहुधीऊडाडा | तेवायराअगलिझणीनउंस्यउंगजउंतिमएसउंवादी १८ | अगनिनूतिविचटउ नाईबोल्यउ | नाईइणेपइऊप रिउम्हारापराक्रम

दग्धाःपुरःकेतस्पादपाः।त्वत्पाटितागजायेनाकावायोस्तस्पुनेकाः॥१८अग्निरूतिरुवाचैवं।नातःकस्तेचयि

नउंस्य उंकाम | कीडीऊपरिमउंपंखीनउराजागहउपराक्रमक रइनानकरइनिबलनईमामान्पइऊषेउइ १९ कमलऊपाडियाहाघीन उंस्यउंकामागमशीतलीकु मलनेऊकुइ | कागाकापिवाऊहुडा नउंस्यउंकाम | मृगमारिवाझी हुनउंस्यउंका

क्रमःकीटिकायाकथंपक्षिराट्करोतिपराक्रमं॥१९पद्मस्योत्पाटनेस्त्री।ऊवारःकाकस्तनो।दगस्यमारणे

म | निश्चलऊपरिमबलनउंजा इक्कउकोईघ्रमंमइनही २० गौतमविच्चटाअगनिनूति नाईनईकहइबइ | हुनाईआजदिवसलगी रहीगयउछइ | एहवादी | मुंगनउंपाककीधइक्कोताइ जिमकोईकोरउरहीजाइतिम

सिंहांमक्षिःकिंकापित्रस्यते॥२०गौतमोभ्रातरंप्राह।सोऽद्याप्यवतिष्ठतेवाद्यमौविदितमुऊंपाकंककऽ

पवादीर झीउबइ २१ घालतांजिमकोईतिलएकर झलाइतिमएवादीरहीउबइछेदाणउरहइ दलतांजिमकोईकणन मूडकरतांजिमकोईट णएकरइ | अगस्तिनइंजिमपीता कोईमरोवररहीजाइ २२ घोइतोजि मकोई

कोयघा॥२१घीलयतस्निलःकश्चित्।दलतश्चकणोयघा।मूडयत्रतृणंकिंचिद्गस्तेःपिबतःसरः॥२२मईयत

ऊकयरहीजाइ | तेहनापरिईएहवादीमो हु रइरहीगयउछइ | तउहुपुणऊंमयउं घमउंनही | फोकटजूठउसर्वज्ञएण उंकहिवेरावताघका २३ | एकएहवादीअणजीतइ माहु

सुघःकोपि।तहदेयंममास्त्वत्।।तद्यापिमासन्निहिमुक्तसर्वज्ञवादिनां॥२३एकस्मिन्नजितेस्मिन्नाम

रउंसर्वजीतउंतेअण जीतउंघाइ | एकवारमतीशीललोप इनागइतउ | मदाअमतीघाइ २४ जिलिका रलिक हिउंछइ | पुणएव हुणस्यउं | ममुऽमांहि नबूडइअरं

ह्रीमप्यजितंस्तवेत्।एकदाहिमतिलुप्ता।शीलाम्यादमतीसदा॥२४यतः॥क्षिप्तेस्वल्पेपिपोतःकं।पाम्बोधनेने

वमङ्कति। नसालोएल्लतेथारेः। शालोरोपातितेकिं॥२५ इहवादिगणोसोट। कलीटादिसमुद्भवाः। कस्मादद्भय

श्रीगया उम्हिमुरु श्रणलिधी मदामर्वदी २६ लाटदेशनावा दीवेगलागया | वादीनावृंदटोला | मालवादेशनामौन करीरह्या | मगधदेशनावादी मूसणा घयाकहइबोलतांनावइ | मदतिजी नईगूज

तोप्राज्ञा। यूयंममपुरः सदा॥२६ लाटाद्रुगताः प्रवादिनिर्वहिमौनंश्रिता मालवाम्लेकाताः मगधाग्गताग्गतामदो

रातिना वादी गाजता रह्या काश्मीरादेशनावादी श्रावीपगे लाग | नाशीगयातिलंगदेशनावादी | जगत्रमोहितेकोईनघेजेमुरुय्यउंहिव

गर्जतिनागोर्जराः। काश्मीराः श्रणताः प्रलायनकराजाताः शिलंगेगत्वा। विद्वेषाप्यसनाम्नियोहिऊतेवादं

डांवादकरइ २७ उकालदारमर्पनेइं उडुकउ चपेटालाप्टदेवाउद्य मीघइउदीमइछइ ऊंदिरउदांतइंकरी बिलाडानीडादपाडिवाश्रा दरवतघइउदीमइछइ २८ बलदपे शवणहु

मयासांप्रतं॥२७ इक्षुमर्ण्डमयमूरुकाश्चपेटांदात्तुमुद्यतः। मूषोरदैश्चमाक्षीरं दंष्ट्रयापातायसादरः॥२८ वृषनः

घीनईशींगउ ईकरी ऊतावलउमारिवावां छइइम दीमइछइ दाखीदांत वउई पर्वतनइपाडिवावेगइंकरी उद्यमकरइइमदीमइछइ २९ राजालउकेचारी सिंघना घंघनीकेरा रानावाल

सर्वेजंतूंगैः। प्रहर्तुंकांक्षतिदुतं। क्षिप्रंपर्वतपातायदंतासायततेरयात्॥२९ राजकः केशरिस्कंधं कमरान्क

त्रोडिवावां छइछइ तिममादूरीदृष्टिश्रागलिएलोक मोक्षिसर्वज्ञ षणउंकहिवरावइछइपुण एउंकहिवरावेवार ३० वायरासाहमइरहीन ईं दवानललगाडइउएणइ इमनजाणइजेकउ जबलु म्यउ क उ

ष्टुमीक्षते। महद्दृष्टेयदसौसर्वं। विद्वेषंख्यापयतेजने॥३० विद्वेषकं। ममीरान्मुखलेनादावान्निर्व्योल्लितोमुनाक

श्रचिशरीरनामुखनईकाजिएणइलगाडी। इमनजाणइजेकऊ श्रचिइंसुखनऊइ ३१ वेषनागमर्पनीमणि लेवा एणइश्रापणउइछ पमाल्यउ सर्वज्ञनईश्राउंबरईकरी एण इजेइउंहूइ

पिकङ्कलतादेहासुरवायालिंगितानतु॥३१ वेषत्रीर्यमणेलाउं। रक्तःक्षीयःप्रसारितः। सर्वज्ञादोषउक्तानेनायद

श्रउइमनेजाणइ जेएहनइनहुइ वाई ३२ जांलगिसूर्यनऊगइतां लगिचंद्रमाघकावा करइ जिवारइसूर्यऊग्यउतिवारिखद्योतनइंचंद्रमा नउंबलनहीतिमहुउं जिवारिमउंद्यउतिवारिएमालेषामाहि

ष्परिकोपितः॥३२ युग्मं॥ तावऊर्द्धंतेखद्योताःस्तावऊर्द्धंतिचंद्रमाउदितेउमरुत्रावो॥ नखद्योतानचंद्रमाः॥

३३ तांलगिमदझरतउल्लघी श्रकालनामेदनीपरिइंगाजइ जांलगिगुफामांदिलामदना घुंलडाऊंटिकावानावा इमोनलइमानलइएतलइ

३३तावऊर्द्धंः प्रस्रुतदानगल्लः। करोत्पकालांबुदगर्जितानि। यावन्नसिंहस्यगुहास्थलीषु। लांगूलविस्फोटरवश्च

मदगल इ ३४ श्रथवामांदराजाइगनई योगइएहइलीश्रावुउलइ योगिइएहइहोश्रावुउलइ ऊकालमांहिजिमकैप्यानईवांबा घीघणउश्रेनुनउला सऊइनईदर्पइतिमएहुश्रावुउ तेवारू हुवउं ३५ यम

णोति॥३३ ममनाग्यन्नराद्यो। दंवाद्दृयेममुपस्थितः। ऽस्तिक्रुधितस्यान्नालासस्तिर्तिगोयघा॥३५ य

नईम्यउंमालवउंचेव लउ छइ वचनकलावंतनईम्यउंश्रणी वर्णविकउंमर्वंवर्णविइ रूउउरसमिल्यउ कउ णलोडइसरू श्राखीदइ चक्रवर्तिनईम्यउं श्राणजो विक्युं कोईश्रणजाणिउनही ३६ बुद्धिवंतनईम्यउंश्राणमिनि वउं सर्वमवइसर्वंघमाणजा

मस्यमालवोहरः। किंमाकोवावचस्विनः। श्रपोषितोरसान्नेन। किंमजेयउचक्रिणः॥३६ सुधिया किंमेयस्या

नई योगीमरनईम्यउंश्रणपा मिक्युंसर्वंघामइ शून्यनईश्रणश्रावुंम्यउंछ इसर्वंघाइ ऽकेनेनईश्रणकहिवुंम्य ऊछइसर्वंकहइज ३७ कल्पवृक्षनईम्यउंश्रणदे वउंछइवांबाउसर्वंघइ म्यानईम्यउं

तां किंनाऽमाद्यंत्ययोगिनः॥ क्रुधितस्यनकिंखाद्यं नकिंवाच्यंखलस्यच॥३७ कल्पद्रुणा मदयंकिं। निर्विमानो

किमत्यजो गच्छामि तर्हि तम्पोतो पट्टपाण्येत्य पराक्रमो ३०लक्षणेममदक्षद्यं साहित्ये सहितामतिं तर्के कक्रशाताने

त्वं कक्षीकृत्य नालिमेश्रमः ३१ए काव्येऽत्यप्यायं पुरुदेवाणंदीवाणंचानासेहनसोमे खणेणसव्वन्नवायेसो

॥४०॥ इत्युदयेऽहसि यो वादस्थलिस्थया पंचछात्रशतैः पद्मानोमो विरुदेति॥४१॥ सरस्वतीकंगलरण

वादिविजयलक्ष्मी

शरणः ज्ञातसर्वपुराणः वादिकदलीकृपाणः विज्ञेयश्रेणिशिरामणिः ऊमतीधकारनसोमणिः जितवादिदृंदारकवादियुरु
डगोविंदः वादिघटमुकुरः वादिघूकसारसकरः वादिमदमुद्गरः वादिदृढकरिः वादिमुखभंजनः निरवद्यविद्याविं
दितसकलत्रपालरंजनः वादिदर्पदलनः वचोवासविदग्धवादिदलाघत्रुषावलिमलीपरिवादिमस्तकशूलवा
दिगोधूमघरट्टः मर्दितवादिमरट्टः वादिकंदलऊद्दालः वादिदृढसमीपालः वादिदुर्जिह्वकारः वादिगजसिंहः वादीश्वर
लोहः वादिहृदिमालः वादियुद्धमालः वादिमदज्वरधन्वंतरिः वादिहरिणहरिः सरस्वतीनिलयः चतुर्दशविद्यालंकारः षट्दर्श
नप्रस्थापनाचार्यः गोपालः निस्तुषकलावल्लीमल्लवालः सर्वशास्त्रधुरंधरः सभ्यतिकलालत्तारः बुधराजसमाजमुकुटः बुधबु
द्धिविकटः ज्ञानरत्नाकरः महाकवीश्वरः श्रीषष्टतर्कस्मृतिनिर्णीतसुक्रमतिः रुचिलसरस्वतीप्रत्यक्षसारदीजितान
कवादः सरस्वतीलब्धप्रसादः॥ नरसमीपिश्रीमद्वीरनरेन्द्रसभायां प्रधानपुरुषः

सरस्वतीलब्धप्रसादो निर्वीरनिरवद्यो यानालिकोदध्येसविस्मितः॥ किंब्रह्मशंकरयमेंकिंवाकिंविष्णुब्रह्मवाकिंमु॥४२॥ चंद्रः

+सादि+

ज्ञानगुणनकुरु+

ऊमविरुदावली
बोलावतउगीत
मस्यामिनगवंत

ऊनाएचंद्रमानऊरुचंद्रमा तउकलंकीलहएएमोत्तिउक्क लंकनघी | अथवाएएउसूर्यो नासूर्यनऊ इसूर्यतउउन्हउऊरुएतउ | अथवाएइंदुऊरुनाइंदुतउनऊरुइंदुत उयरुयअंधिनउधणी | अथवाएएउमेरुपर्व तऊरुनामेरुनऊरुतेतउ
किंमनयकलंकमदितः सूर्योघ्वानोसयत्नीकृतः किमुवामवोनमद्दः स्तोकोयतोगीयते। किंवास्वर्णगिरिर्नमो

अथवाएएउकल्पवृक्षऊरुनानऊरु तेतउवा। दोउअपूरुएतउअणावी | एहंजाएउजेलोकमांदिव इमानकहिवाइछइतेएह | ४२ सूर्यनीपरिइंडःप्रेक्ष्यम् | समुद्रनीपरि इंडस्मरअ
तिकठिनःख्यातःसुरद्रुर्वा। सोम्पाद्वितितमात्रदःसद्विजनेऊंवर्द्धमानोत्समो॥४२॥आदित्यमिवडःप्रेक्ष्य। समुद्रमिव

साधतस्य उनजाइ | बीजमंत्राक्षरनीपरिइंद्र चर्चेचर्चेउनजाइ | मरुवौउदयंतंश्रीम हावीरनईदेखीनइंचौ | ४३ | हाइतिखेदेमईमाद | खिक्कउंकिमरहिस्य इश्वरंबलउंऊपरासउं | प्रमादनइंकीलनईका जिइंडाहउकउणसाजि
ऊरुरं। बीजाक्षरमिवाचर्यं। दृष्ट्वावीरंमहोदयं॥४३॥कथंमयामरुच्चद्रा। रक्षणीयपुराजितः॥ प्रामादकीलिकारुतोर्त्तु

वा वांछइअप्पिउकोई नवांछइतेमइंवांछउ | ४४ | सव्वनातांतणानइंअप्पिइंडाहउघूकेषकाउण इरत्रोडिवावांछइअप्पिउकोईनवांछइतमइं | करुणपुरुषस्तलाकामकेघटनईवीकरीनईका जिइंफोडइं। अप्पिउकोईनृफोडइतेमइंकामु | ४५ | कउणडा
कुंकोनामवांछिति॥४४॥सस्त्रीधुरुषोरूरं। कस्त्रोटयितुमीदृते। कः कामकलशांशीर्ष। स्फोटयेठीकरीकृते॥४५॥सम

स्त्रीपुरुषरांखिनईकाजिइंडहलनचंदन बोलइअप्पिउकोईनवांछइतेमइंछुइं | लोहनाषीलानईकाजिइंमसुंडमादिकउणवाह णनाजइअप्पिउकोईनवांछइतिममइंकीमउंजेऊं | ४६ | इंइंस्तुतिदेगो तम | एहवउंवचनसग वंतइंकहिउतिवा
नेचंदनकोवा। दहनः प्रार्थमप्यघं। लोहार्थीकोमरुत्नाथो। नोत्तंगं कत्तुमिच्छति॥४६॥इंइंस्तुतिदेगोयम। मागयमुत्तिजि

रिगोतमचौ नवइ | एहतउमाहरुउंनामऊ णइछइ | अथवामाहरुउंनामकउ णनजाणइहरुउंतउअघ लइप्रकिहवउं | ४७ | मुखिइंआप्यइमनग वंतइंमउंतिवारइंगो तम | मीठइंवचनइंहुउंपल्ह सउंनहीपतलउंनहीं | तेकउ ग
लोलचिंतेशनामंपिमेविआणइ। अस्वाकोमनयाणइ॥४७॥त्यागतप्रच्छनदध्रो। मिष्टंवाक्यैः कथंप्रियेकपिष्ठं

नऊ हुजे | वायर इ ऊ तावलउं इ कुंथी पउइ | ४८ | तेगाइन ऊ इ ते गोवालीजा इ। तेमुगन ऊ इजे पाणी इं प ल्हलइ॥ तेमाणिक्य न ऊ इजे परीक्खउं जा इ। तेघउउन ऊ इजेलाकडीइं नाजइ। तेवेलउं नऊ इजे हाथइं त्रोडी जा इ। तेलो कन ऊ इ जे वचन इं रंजएउं जा इ।

तन्तयल्लघ्रा। वातेनपतितिकुमात्॥४८ नतेगो। मुऊरमाणिक्य। ष्टघटधवलीपजना इनुयो। माध्यगोपा। कुरमाणिक्य।

तिमइउंतेनहीजेवचनइंरंजएउं जाइउं वचनइंपल्हलाउ | ४९ | जउएमाराखिया नउ | मैंदेइजाणइजाणीनइंमैंदेइना जइ | तउमुनइंविस्मय आश्चर्यऊपजइ | इमचींतवत उगौतमस्त

विदुइयष्टिधकरपवाकुचयेः॥४९ जइवाल्लियगयंमे। संसयमनिऊ अइवछिदिक्षा। तोऊऊविम्हउमो। इअचिंतंतो

गवंतइबोलाव्य उ | ५० | एउमानउंमैंसारमा इ जीवछइ | अघवानघीएइवउमैंदेइउऊन | वेदनापदनउअर्घउं गौतम | नघीजाणतउ तेइनउएहुअ इं इगौतममानलि | ५१

पुणोतणिउं॥५०किंमनिअछिजीवो। उआऊनछिशिसंमउउआ। वेअपयाणयुअछं। नयाणइतेनिमोअछो॥५१

मघीतउममुइएउं गाजइछइ | अघयाएउं गंगाइए गाजइछइ | आदिवब्रह्मानउअछि शइ एउं गाजइछइ | एहवउमहावीरनउ शइगाजतउऊउ | ५२ | सगवंतवेदनो पदकहइछइ | विज्ञानघनएहआ त्माएहपंचेभ

मुमुइोमघमानोंकिं। गंगाइरोघवाकिंमु आदिब्रह्मअछिनिः किंवा। वरिवेदअछिनिर्वसो॥५२ वेदपदानि॥ विज्ञानघनएव

एहवुतघीऊपजीनइंवली आतमाएहजपांचभोंहिथ्य तमांहि विणासइछइ | परलोक जावउं कायानइंनघी | वेनिश्चितंए हते आतमाज्ञान मयछइ | ब्रह्मकरता परमज्ञान

तेस्योहतेसपः। समुछायपुनमाप्येवानु विनश्यतिनत्रेत्यसंज्ञास्तीतिजीवास्तावः। सवैअयमात्माज्ञानमयो। ब्रह्मज्ञान

मयछइ | मनमयछइ | वचनमयछइ | श्रोत्रमयछइआतमा | कानमयछइआतमा | आकाशमयछइ | शरीरमांहिवा यछइतिलिवा यमयछइ | शरीरइतामछ इतिलिनेजम यछइ | शरीरइसमछ इतिलिअप मयछइ | शरीरविंदु तिलिपछीम य छइ | रामच उइतिणि क्रोधमयछइ

मयो। मनोमयो। वाग्मयः। चक्षुर्मयः। श्रोत्रमयः। आकाशमयः। वायुमयः। तेजोमयः। अपोमयः। पृथ्वीमयः। क्रोध

ममताइअछो | हर्षजए | धर्ममय | अधर्ममय | शरीमय | दयामयछ | जेजेहवउं करइंतेते | सुखनउकरनारउ | पापनउ

मयो। ऽक्रोधमयः। हर्षमयः। धर्ममयो। ऽधर्ममयः। दयमयः। दोमयइति। यथाचारीतथाभवति। साधुकारीसाधुर्भवति। पापकारीपापोभवति। पुण्यः। पुण्येनकर्मणाभवति। पापः। पापेनकर्मणाभवति। यजुर्वेदापनिषदिऋचसंहर्मो। तथादद

दमसंवरा। दयाकरुणा। दानइएदवा। ददाजेजाणइतेजी वकहियइ | इमजीवनीढिंढइ | विजयवंतउढइएहनउनीकानो गवनारउएहनउएशरीरछइ | सोएवस्तु नणी | उदननीपरिरं अनेरउसोकढइतिमए शरीर

ददमोदयादानो। इतिदकारत्रयंयोवेतिसजीवइतिजीवसत्ता। विद्यमानोसाऊकमिदशरीरं। सोएवा। दोदनादिव

जिमहुधमांहिघीछइ | काष्ठमांहि | जिमफूलमांहि | जिमचंदकांतरत्तनमां | तिमशरीरमांहि | अनेरउ | डुलिकारलिनगत्र | नउ अनेरउछइ

तू। क्षीरइतो। तिलेतेल। काष्ठेनि:। मोरतऊमुखो। चंदकांतेसुधयइ। तथाऽत्मोगगतः इमकु। अतोऽनिर्वचः।

श्रीमच्चवीरनामु ख घकी | एहवउवेदनापदनउअ र्घ जाणीनइ | दीक्षा लेइ | उपनेवा विगमेवाधु वेवाएहवीत्रिपदीमांनेइ | श्रीगौतमस्वामिहादशां गीनिपजांतकरनाऊआ | ५५ | थैदहटाल्यइछक | जरामरण

श्रीवीरमुखतो वेदपदार्थमवगत्य॥ च॥ प्रव्रज्यांत्रिपदीलब्धा। द्वादशांगीसनिर्ममो॥५५ छिन्नेसिसंसयंमो॥ जिणेण

रणरहितजिनइंसगवंत इं | तेगोतमश्रमणवया दीक्षा लीधी | पांचसइंविप्रयाघिइं | ५६ | पणहिलागणधर नउअधिकारकहिउ | तेइंऽनूतियतीघया मांतलीनइं

जरमरणविप्पमुक्केण॥ सासमणोपवइउ। पंचहिंसरुखंडिअमणहिं॥५६ प्रथमोगणधरः। तंचप्रव्रजितंश्रुत्वा॥

Digitized with financial assistance from the Government of Maharashtra on 11 June, 2017

तेइ इन्द्र तिनउ विचटउ कदाचि पर्वत गली भाई अगनि नृति चौत नइं पाणी घाइ मुणमा वइ ळइ हुउनाई हार इनही कदाचि पाणी आपणी इं उन्हुउं घाइ ५७ कदाचि चंद्रमाना मोडला घकी अंगारानी वृष्टि घाइ कदाचि अगनि

दध्यौ तद्भंधवोऽपरः अपिजाउइवेदद्रि। श्चलेऽचलेमपिकुचित्॥५७ मृगांकमंडलाक्रान्तु जायतेंगारवर्षणं। वज्रेरपि

नीजाला कालहिमनीपरि इंशीतल घाइ ५८ कदाचि अमृतघकी पुण मरण ऊइ कदाचि विष घी जीव तय ऊइ कदाचि हिमवंत प्रमुख कुल गिरि चलइ कदाचि वायपुण निश्चल घिरि घाइ ५९

+ प्रालेय+ सवेयुश्च ज्वालाश्चिन्नलाः॥५८ पीयूषादपि मृत्युः स्या। ज्जीवितव्येविषादपि। चलेकुलाचलोघोपि स्याच्चायुरपिनिश्चलः॥५९

कदाचि मनुष्यलोकं देवलो कनउपाल इउघाइ तलऊ परि कदाचि समुइस्तका इ कदाचि ज्योतिषचक्र ऊपरि घीदेउउपडइ कदाचि रुमिपातेस्तमां दि जाइ ६० कदाचि मेरुपर्वत उमा पडइ उजाइ पुण हुए

स्याद्घ तपासो पिशोदस्याः स्युष्णनारा करोपिहि। पतेज्योतिर्गणोप्येषः स्वर्वीपातालमाविशेत्॥६० मेरुरणुक्रियेतान्नार

* भाई+ १४ उंकहीइं दारइ जन ही हरवंमानतउतउनघी पुणतउ हुअणम हुहुतउघकउलोकनइं घ ळइमाचउकडइ ६१ पोचइं कुलक मध्य श्लोक तेइइन्द्र तिनइं रीक्षोमानलीनइं बीजउ अग्नि नृतिअम रमइंकोपिइंआवइळइ * ज्ञाच्चते क्रिमळइ+ ४

येनत्रबांधवः। अश्रद्दयापुनर्वक्या। पत्रच्छमत्स्वयंतेनाति॥६१ पंचत्रि ंशत्कलं। तेपद्दयंसोउ बीउआगळइअमरिमण

जाउं भाईनइंआण तेअमणमाहावीरनई दर वी जीपीनइं ६२ महवीरइंकलइंकरति माहुखभाईळप्पउ जाणउंळउंकोईमाया वीईइजालाउंळइ हिवकोंजाणइकि मइवउं हुवं * अण+२

गच्छामिणमाणेभी॥ पराजिणिताणतंसमणं॥६२ ळलिउळलाइणासो। मनेमाइंदजालिउ वाविकोजाणइकल्यवतो६

उंनिमऊंस्यइति मजालिस्यइ ६३ तेजउएकइपक्क मांडीनइंमुकनइं जीविस्यइं तउहुंतेदूनउ जनिष्य अंतेवासी घास्यउं इमकहितउनगवंतन इंसमीविइंआवउ ६४ बोला यउ ३०

नाहिवद्दमाणसो॥६३सोएस्संतरमेगं पि। जाइमेतउ मितम्मवा मीमन्नंऊगउ। वुत्तोएसोजिणसगासा॥६४ आसढो